

अगस्त 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10



रिलेटिव
दृष्टि



रियल
दृष्टि

शुद्धात्मा

शुद्धात्मा

शुद्धात्मा

अब रियल और रिलेटिव को देखते-देखते दोनों अलग दिखाई देंगे। इन चमड़े की आँखों से रिलेटिव दिखाई देता है और अंदर की आँखों से रियल दिखाई देता है। इस तरह से देखेंगे तो एक घंटे में ही पुणिया श्रावक की सामायिक हो जाएगी।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष: 11 अंक: 10

अखंड क्रमांक : 130

अगस्त 2016

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन: (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahaveideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahaveideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahaveideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

विविधता भरी समझ, सामायिक के बारे में

संपादकीय

सभी धर्मों में ध्यान व भक्ति द्वारा एकाग्रता की जाती है। विशेषरूप से जैन लोग सामायिक करके एकाग्रता लाने का प्रयत्न करते हैं। उसमें वे सामायिक करने से पहले तय करते हैं कि संसार संबंधित विचार नहीं करने हैं लेकिन आँखें मींचते ही सब से पहले वही याद आता है। परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) यहाँ पर यह विज्ञान खुला करते हैं कि मन खुद ही चंचल स्वभाववाला है। वह कभी भी स्थिर नहीं रहता क्योंकि वह रिएक्शनवाला है। यथार्थ सामायिक तो वही है जो चलते-फिरते हुए भी रहे और जिससे अपार आनंद रहे। उससे सभी पाप भस्मीभूत हो जाएँ और साथ ही कर्मों की निर्जरा भी हो।

यह महत्वपूर्ण है कि सामायिक करते समय खुद किस ध्यान में रहता है। सामायिक करते हुए, माला करते हुए ध्यान अगर कहीं ओर चला जाए तो उस क्रिया का फल नहीं देखा जाता, लेकिन उस समय खुद जिस ध्यान में है, वही देखा जाता है। मुक्ति के लिए अगर सही प्रकार से ध्यान नहीं किया गया तो वह अपध्यान में जाता है। इस काल में ऐसे अपध्यान उत्पन्न हो गए हैं। जिस चीज की कीमत ज्यादा हो, चित्त वहीं पर जाता है।

क्रमिकमार्ग में ध्याता-ध्येय और ध्यान, इन तीनों की एकता को सामायिक माना जाता है। वे शुद्धात्मा को ध्येय मानते हैं, खुद ध्याता है और ध्यान सेट करते हैं। उसमें भी शब्द से ही ध्यान देते हैं, यथार्थ शुद्धात्मा की तो बात ही नहीं है।

ज्ञानिपुरुष से प्राप्त हुए आत्मा रूप में निरंतर रहना ही सामायिक है। सामायिक अर्थात् हमेशा ही इस जागृति में रहे कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' उसके बाद फाइलों का समभाव से *निकाल* करना और पाँच आज्ञा रूपी ज्ञान में रहना ही सामायिक का स्वरूप है।

यहाँ पर अक्रम में तो हमें शुद्धात्मा का निरंतर ध्यान रहता है। अब अन्य और कोई ध्यान करने की जरूरत ही नहीं रही। फाइल न-वन क्या कर रही है और क्या नहीं सिर्फ इतना ही देखते रहना, यही अपने विज्ञान का सार है। दूसरा, रियल और रिलेटिव, ये दोनों व्यू पोइन्ट दिए हैं। अतः सभी जीवों में शुद्धात्मा देखते-देखते जाएँ तो एक घंटे में तो पुणिया श्रावक की सामायिक हो जाएगी।

यहाँ व्यवहार सामायिक और पूर्णाहुति की सामायिक से संबंधित वाणी का संकलन हुआ है, यह किसी धर्म के खंडन-मंडन के लिए नहीं है। मुमुक्षु दादाश्री के पास खुद की आध्यात्मिक उलझनें रखते थे और दादाश्री से उनके सैद्धांतिक खुलासे प्राप्त करते थे। पूज्य दादाश्री द्वारा उद्बोधित सामायिक की समझ को यहाँ पर संकलित किया गया है। उसका यथार्थ आराधन मोक्षमार्ग में प्रगति करने में सभी के लिए मददगार साबित हो यही अभ्यर्थना है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

विविधता भरी समझ, सामायिक के बारे में

लौकिक सामायिक एकाग्रता का साधन है

प्रश्नकर्ता : अभी कुछ संप्रदायों में सामायिक और प्रतिक्रमण चलते हैं, उस बारे में आपका क्या खयाल है ?

दादाश्री : वे सामायिक और प्रतिक्रमण नहीं हैं। वह सारा तो लौकिक है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन है तो सही न ?

दादाश्री : नहीं! लौकिक है।

प्रश्नकर्ता : उसमें स्वाध्याय भी हो जाता है, स्मरण भी हो जाता है और एकाग्रता भी हो जाती है उस सामायिक और प्रतिक्रमण में।

दादाश्री : लेकिन सामायिक करना किसे आता है, ये मुझे बताओ न ?

प्रश्नकर्ता : वह अलग बात है कि कैसी होनी चाहिए लेकिन.....

दादाश्री : नहीं, यथार्थ सामायिक करे तब तो बहुत काम निकल जाएँ लेकिन सामायिक में तो काम करते रहते हैं, फिर कैसे हो पाएगा ? इसका, मन का ठिकाना कैसे रहेगा ?

प्रश्नकर्ता : जैसे कि जब बालक पढ़ने जाता है तब एक के बाद दो लिखता है, इसी प्रकार अगर यह सामायिक करेंगे तो फिर एकाग्रता होती जाएगी न धीरे-धीरे ?

दादाश्री : नहीं, नहीं! यह काल तो फिसलनवाला है न!

प्रश्नकर्ता : तब तो फिर करने का अर्थ ही नहीं रहा न ?

दादाश्री : नहीं रहा, फिर भी अगर करे तो नुकसान नहीं है। बेकार में और किसी भाग-दौड़ में पड़ने के बजाय यह अच्छा है। इसके पीछे उसकी भावना अच्छी है न!

सामायिक का मतलब तो यह है कि 48 मिनट तक वह ध्यान बदलना नहीं चाहिए, उसे सामायिक कहते हैं। यह तो सभी के लिए एकाग्रता करने का साधन है। आप कौन सी सामायिक की बात कर रहे हो ?

मन को करते हैं स्थिर, सामायिक में

प्रश्नकर्ता : हम एक घंटे के लिए सामायिक करें, तो उस क्रिया में हमें क्या करना है ?

दादाश्री : सिर्फ इतना ही कि मन को स्थिर करने के लिए बाहर के सभी विचारों को हटाते रहना है। ऐसी सारी लौकिक सामायिक व्यवहार में चलती हैं।

प्रश्नकर्ता : लोग जो उपाश्रय में करते हैं, वे ?

दादाश्री : वह सारा मानसिक है, वह

लौकिक है सारा। वह सब मन को स्थिर करने के लिए है क्योंकि मन स्थिर नहीं रहता है न!

एक घेरा बना देते हैं, उसमें अगर बाहर से कोई अंदर घुसने लगे तो प्रोटेक्शन करते रहते हैं। घेरे से बाहर निकाल देते हैं, घेरे में घुसने नहीं देते। जो विचार आते हैं उन्हें बाहर धक्का मारते रहते हैं लेकिन फिर भी मन ढीला पड़ गया है, चला ही जाता है न! ढीला यानी बोटल को अगर टेढ़ा करें तो उसका कार्क कहाँ चला जाता है! इसी तरह मन को वापस लाकर उसकी बाउन्ड्री (सीमा) में रखे रखना, उसी को सामायिक कहते हैं। यह अभी जो व्यवहार में चल रहा है, वह (लौकिक)सामायिक कहलाता है।

हमारे नज़दीक एक भाई सामायिक करते थे। जब मैंने पूछा, “भाई, सामायिक में क्या करते हो? तब उन्होंने कहा, एक घेरा बनाता हूँ और फिर बाहर की किसी भी चीज़ को, ‘मेरी चीज़ नहीं है,’ ऐसा कहता हूँ। इस शरीर से कहता हूँ कि ‘भाई, तू बाहर चला जा,’ मन से कहता हूँ कि ‘तू चला जा।’ ऐसा सब कहता हूँ लेकिन इस तरफ से दुकान घुस जाती है, उसे धक्का मारता हूँ। इस तरफ से वाइफ इसमें घुस जाती है, उसे धक्का मारता रहता हूँ। गाय, भैंसे वगैरह सभी घुस जाते हैं, उन सभी को धक्के मारता रहता हूँ। इस तरह से सामायिक होती है।”

सेठ बैठते तो हैं सामायिक करने लेकिन उन्हें और कुछ नहीं आता तो फिर क्या करें? खुद का एक घेरा बना दिया और दूसरे कोई भी विचार आएँ, दुकान के, लक्ष्मी के या विषय के या किसी मित्र के तो धक्का मारते हैं। सास का विचार आए, बहू का विचार आए तो उसे धक्का मारते रहना पड़ता है।

जैसे कि अगर आपकी दुकान में यदि चोर

घुसने लगे, तो आप घुसने नहीं देते, आप धक्के मारते रहते हो, ये लोग उसी तरह सामायिक करने बैठते हैं। जो भी विचार आते हैं, वे उन्हें धक्का मार-मारकर बाहर निकालते हैं। वह सामायिक धक्केवाली होती है। लेकिन वह भी एक प्रकार की सामायिक है। घेरे से बाहर के विचार आएँ तो उनके लिए कहेंगे, ‘यहाँ नहीं।’ अर्थात् इस तरह से सामायिक का समय बीत जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, मुझे एक बात समझ में नहीं आती कि विचारों को बाहर कैसे निकालें? आया तो आ गया फिर बाहर कैसे निकालें?

दादाश्री : जब विचार आता है तो वह क्या कहता है? उसके मनमें ऐसा भाव आता है कि, ‘तू क्यों आया?’ तो उस समय वह खुद उससे अलग होता है। मन और वह खुद, दो अलग चीज़ें हैं, और विचार, जब वह (खुद) उसमें तन्मयाकार हो जाए तब वह विचार कहलाता है। वह (अहंकार) जब उसमें विचरे तब वह विचार कहलाता है। अतः वह जो कुछ देखता है न, उन्हें धक्का मारता रहता है।

जिसे याद नहीं करना है, उसी के विचार आते हैं

उतने समय तक कोई दखल नहीं करता, शांति से बैठता है। एक जगह पर वह रेतघड़ी रखे रखता है। ऊपर की रेत नीचे गिरती है, जब नीचे गिर जाती है तो उसे वापस पलट देता है। उस शीशी की ऊपर की रेत गिरने में 48 मिनट लगते हैं। जब रेत नीचे गिर जाती है तो कहता है ‘मेरी सामायिक पूरी हो गई।’

वह फिर 48 मिनट तक शीशी को देखता जाता है और कहता है ‘अभी थोड़ी देर बाकी है।’

भगवान ने मना किया है फिर भी शीशी को देखता जाता है।

उस सामायिक में, जो याद नहीं करना है, सब से पहले वही याद आता है! खुद सामायिक लेता है और मन में तय करता है कि आज दुकान को याद ही नहीं करना है तो आँख मींचते ही सब से पहले वही याद आती है। जिसे याद नहीं करना है, वही सब से पहले आता है। इसलिए सब से पहले वहीं से घबराहट शुरू हो जाती है कि, 'अरे, इसे याद नहीं करना है ऐसा तय किया है फिर भी याद आ रहा है?' उसके लिए भगवान कहते हैं, 'यह तय नहीं करना है, ऐसा क्यों किया भाई?' ऐसा तय नहीं किया होता तो ठीक से हो जाता लेकिन वह तो तय करता है।

इसलिए वह परेशान हो जाता है। वापस दूसरे दिन मुझे कहा कि, 'ऐसा हुआ।' तब मैंने पूछा, "तू दुकान को क्यों याद करता है कि, 'मुझे दुकान को याद ही नहीं करना है?' क्योंकि मन रिएक्शनवाला है। तूने एक्शन किया इसलिए वापस रिएक्शन आएगा। तूने एक्शन किया ही क्यों?" लेकिन फिर वह सामायिक में करे क्या? शुद्धात्मा नहीं हुए इसलिए जो विचार आते हैं उन्हें धक्का मारता रहता है।

तो फिर रहा कौन? खुद अकेला ही ऐसी सामायिक करता है! अपनीवाली सामायिक तो उससे होती ही नहीं है न! समता तो रहती ही नहीं है न!

फिर भी लोग क्या कहते हैं? कि, 'भाई, इधर-उधर दौड़ रहा था, उसके बजाय कुछ देर के लिए सीधा तो रहा न!' वर्ना जैसे मछुआरे मछलियाँ मारते हैं वैसे ही यह अंदर मछलियाँ मारता है। इसे सामायिक कह ही नहीं सकते न! वह तो एक प्रकार की स्थिरता है। फिर भी स्थूल भाषा में वह

सामायिक गलत नहीं है। उतनी स्थिरता तो रहती है न! उसे गलत तो कह ही नहीं सकते न!

कोई व्यक्ति अगर दुकान पर भी तीन घंटे तक स्थिर नहीं बैठ सकता, तो वह व्यापार नहीं कर सकता। यह इस पर निर्भर करता है कि वह अपनी दुकान पर कितने घंटे तक स्थिर बैठता है। तीन घंटे तक एक ही जगह पर स्थिर बैठे रहना चाहिए। कितने ही लोगों के पैरों में चक्कर होता है, वे पाँच मिनट बैठते हैं और उठ जाते हैं, बैठते हैं और उठ जाते हैं।

स्पंदन हुआ कि अज्ञान का जोर शुरू

हमें कहना चाहिए, 'दुकान-वुकान, तुम सभी आओ। तुम सब आकर मुझे सामायिक में परेशान करो,' तो सभी भाग जाएँगे। वे सब जानते हैं कि यह क्या किया? कुछ दवाई वगैरह लाए होंगे। मन पटाखे फोड़े तब क्या करना है? उससे घबराते क्यों हो? अगर मन कहे कि 'दुकान तू याद मत आना।' तब कहना 'आ न तू, मैं बैठा हूँ।' 'हे भगवान, दुकान याद न आए।' अरे, कैसा घन चक्कर है तू? अगर दुकान याद नहीं आएगी तो पत्नी याद आएगी लेकिन कुछ तो आएगा न?

जिसके लिए आप मना करोगे सब से पहले उसी का धमाका होगा! और अगर आप कहो कि तुम सभी आना, तो तब वे नहीं आएँगे! आप यदि ऐसा कहो कि 'जब मैं सामायिक करूँ तब तुम सब आना,' तो उस समय कोई नहीं आएगा! ऐसा है यह सारा अज्ञान। अतः जैसे-जैसे आप उसे ज्यादा डिस्टर्ब करोगे वैसे-वैसे वे ज्यादा जोर लगाएँगे क्योंकि जोर लगाना अज्ञान का स्वभाव ही है।

शक्ति माँगकर रहना पुरुषार्थ में

प्रश्नकर्ता : शायद ही कोई ऐसा होगा

जिसका मन घेरे में रहता है। उपाश्रय में जाते हैं तब वहाँ पर व्याख्यान चल रहा होता है, वे लोग सामायिक में बैठ जाते हैं, लेकिन उनके मन तो बाहर ही रहते हैं, अंदर रहते ही नहीं।

दादाश्री : मन व्याख्यान में नहीं रहता, वह तो चित्त व्याख्यान में रहता है और वह भी तब, जब व्याख्यान पसंद हो। बाप जी का व्याख्यान अगर हमें अच्छा लगे, तो चित्त कुछ देर के लिए वहाँ स्थिर रहता है, बाहर भटकना रुक जाता है और दूसरी तरफ मन तो विचार करता ही रहता है। वह तो जब मन वश में हो जाएगा तब कुछ हो जाएगा। तब ठीक से सामायिक हो पाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन घेरे में नहीं रहता, मन तो कहीं और घूम रहा होता है।

दादाश्री : तो वह पूर्ण सामायिक नहीं कही जाएगी। मन जितना इसमें रहे उतनी ही सामायिक। यह व्यवहार सामायिक है और यथार्थ सामायिक में तो चलते-फिरते हुए भी (उपयोग) रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इन दोनों के बीच में मन की झंझट है न। मान लीजिए कि वहाँ जब दूसरा विचार आए, वहाँ से मगन का आया, वहाँ से छगन का आया, वहाँ से चमन का आया। ये सभी प्रतिस्पंदन आने लगते हैं। तो इनका क्या?

दादाश्री : ऐसा है न कि शुरुआत में उन प्रतिस्पंदनों के आने से ऐसा सब होगा। उसके बाद फिर यदि वह जिन इष्टदेव को मानता है उनसे माफी माँगे कि 'आप मुझे शक्ति दीजिए। यह इस तरीके से नहीं हो पा रहा है।' तो ऐसे करते-करते 100 में से 98 प्रतिशत होगा, फिर 80 प्रतिशत होगा। ऐसे करते-करते क्रमपूर्वक कम होता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी पीछे पड़े रहना चाहिए, सतत। सतत जागृत रहना चाहिए?

दादाश्री : वह तो रहना ही है। सतत जागृत रहेगा तभी सामायिक कहलाएगी न! इस घेरे में अगर कुत्ता आए तो 'भाग', गाय आए तो 'भाग', घेरे में नहीं घुसने देता। और कुछ न घुस जाए। वह जो 'भाग' कहता है, वह उसके लिए पुरुषार्थ है। अब सामायिक का अर्थ समझ में आया आपको, पूरी तरह से?

असामायिक को माना गया है सामायिक

दादाश्री : आप सामायिक किस तरह से करते हो?

प्रश्नकर्ता : सांप्रदायिक विधि के अनुसार जो सामायिक होती है, उस विधि के अनुसार सामायिक करते हैं। नहीं तो तीन बार नवकार पढ़ते हैं और यों ही बैठ जाते हैं। यों ही बैठ जाते हैं, तब भी आनंद आता है।

दादाश्री : नवकार मंत्र बोलते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, नवकार बोलता हूँ, पूरा समरण बोलता हूँ, सभी कुछ करता हूँ। रोज़ की चार-पाँच सामायिक करता हूँ।

दादाश्री : ओहोहो! चार-पाँच सामायिक करते हो? लेकिन आप सामायिक किसे कहते हैं? सामायिक को सामायिक कहते हो या असामायिक को सामायिक कहते हो?

प्रश्नकर्ता : सामायिक और असामायिक किसे कहा जाता है, वह ज़रा समझाइए न।

दादाश्री : ये सभी लोग स्थूल सामायिक करते हैं। स्थूल सामायिक अर्थात् मन को व्यग्रता में से एकाग्रता में लाते हैं। उसे एकाग्रता मानते हैं। अतः उसे व्यवहार सामायिक कहा जाता है।

यह स्थूल सामायिक तो मजदूरों को भी रहती है! अरे! यह तो इन्हें, व्यग्र हुए सेठों को नहीं

रहती। स्थूल सामायिक मजदूरों को रहती है लेकिन उनकी व्यर्थ जाती है। व्यग्रतावाले को एकाग्रता हो जाए, वही काम का है! सामायिक को तो समझते ही नहीं। सामायिक किसे कहना चाहिए, वह भी नहीं जानते।

भगवान की बताई हुई सामायिक कैसी?

भगवान ने सामायिक किसे कहा है? ऐसा कहा है कि 'जिन्हें आर्तध्यान और रौद्रध्यान नहीं होते उनके लिए पूरा दिन सामायिक ही है।' कितने समझदार थे भगवान महावीर! आपके लिए मेहनत करने को कुछ भी नहीं रखा। और इन लोगों की एक भी सामायिक भगवान 'एक्सेप्ट' नहीं करते। आर्तध्यान और रौद्रध्यान एक गुंठाणे के लिए, 48 मिनट के लिए, बंद हो जाने चाहिए। 'मैं चंदूभाई हूँ,' करके सामायिक करता है। खुद का ध्यान वैसा रहा कि 'मैं चंदूभाई हूँ', तो चंदूभाई ही हो। ज्ञान तो वही का वही है, अज्ञान ही। वह अज्ञान दशा में सामायिक में बैठा है, सांसारिक दशा में।

जैसे कि अगर इस नीम के पेड़ को काट डालें तब भी फिर से उग जाता है, तब भी वह कड़वा ही रहता है न? क्यों, काटने के बाद अगर अंदर शक्कर डालें तब भी कड़वा ही रहेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, मूलतः ऐसा ही है, दादा।

दादाश्री : मूल स्वभाव से ऐसा ही है! उसी तरह यह 'चंदूभाई' सभी राग-द्वेष बंद करके सामायिक में बैठें, तो वह सामायिक किस की करेंगे? न तो आत्मा को जाना है, न ही मिथ्यात्व को समझते हैं! जो मिथ्यात्व को समझता है उसे समकित हुए बगैर रहेगा ही नहीं।

उस सामायिक से कम होता है देहाध्यास

प्रश्नकर्ता : तो दादा, जब तक देहाध्यास है

तब तक जो स्वाध्याय करते हैं, वह तो देहाध्यास से ही होता है न?

दादाश्री : साथ में ही होता है।

प्रश्नकर्ता : तो उसका वह स्वाध्याय उपयोगी नहीं रहता न?

दादाश्री : नहीं, (ज्यादा) उपयोगी नहीं रहता फिर भी वह देहाध्यास को कम करता है न!

प्रश्नकर्ता : स्वाध्याय वगैरह सब उसे कम करता जाता है?

दादाश्री : स्वाध्याय अगर अच्छा हो न, तो फायदेमंद होता है। देहाध्यास को कम करता है। लेकिन यह जो 'मैं कर रहा हूँ, (मैंने) सामायिक की, मैंने प्रतिक्रमण किया', इसमें प्रतिक्रमण करना किसे कहते हैं, कि कपड़ा साफ हो जाए। यह प्रतिक्रमण करना यानी साबुन डालना, तो उससे कपड़ा साफ हो जाना चाहिए। अगर कपड़ा साफ नहीं हो जाए तो उसे साबुन कहेंगे ही कैसे?

मानसिक सामायिक

प्रश्नकर्ता : ये जो दो घड़ी की सामायिक करते हैं, उसमें कौन-कौन सी क्रियाएँ हो सकती हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, यह सामायिक जो है न, वह मन की सामायिक है। दुकान के विचार आएँ या दूसरे कोई रसोई के विचार आएँ, उन्हें धक्के मारते रहना है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे कोई विचार नहीं आते।

दादाश्री : तो क्या आते हैं?

प्रश्नकर्ता : कुछ भी होता रहता है पर विचार नहीं आते। मैं तो किताबें पढ़ता हूँ।

दादाश्री : तो किताब पढ़ने से सामायिक

होती ही है। दूसरे कितने ही लोगों को ऐसा (विचारों को) धक्का मारना नहीं आता, इसलिए वे पुस्तक लेकर बैठे रहते हैं। वे पुस्तकें ही पढ़ते रहते हैं। कितने ही लोग अन्य विचारों में, कितने ही लोग मंत्रों में, या किसी और चीज़ में घुस जाते हैं लेकिन वे सामायिक में रहते हैं। एक घंटा हो जाए तब कहते हैं कि 'सामायिक पूरी हो गई।'।

अतः ये लोग जो सामायिक करते हैं उसमें अगर धार्मिक पुस्तक लेकर बैठें तो भी चलेगा, लेकिन वह सब मानसिक सामायिक कहलाती है। मानसिक अर्थात् उसका आत्मा से लेना-देना नहीं है। उससे मन स्थिर होता है, मन मजबूत होता है या फिर जब तक शास्त्र पढ़ता है तब तक दूसरे विचार नहीं आते। टाइम का उपयोग खराब जगह पर नहीं होता और सामायिक हो जाती है। सामायिक का फल मिलता है। उससे मन अच्छा रहता है।

इसे कहा गया है स्वाध्याय सामायिक

प्रश्नकर्ता : जैसा जैनों में है, उसी तरह दूसरे धर्मों में भी ऐसी कोई पद्धति है क्या ?

दादाश्री : सभी जगह पर ऐसा है न, वहाँ पर स्थिरता करने का गुण है ! वहाँ पर भक्ति करते हैं, यहाँ सामायिक करते हैं लेकिन यह सब मन को कुछ समय के लिए स्थिर करता है।

सामायिक का मतलब क्या है ? कि आपका ध्यान जो कहीं और था, वह पौने घंटे तक इसमें रहा, स्वाध्याय में रहा, ऐसा स्वाध्याय सामायिक कहलाता है। लेकिन ऐसा कहा जाएगा कि वह उपयोग अन्य जगह पर रहा लेकिन फिर भी ये सीधे नहीं रहते, तो फिर भगवान भी इसे कैसे जमा करें ? जो पलभर के लिए, 48 मिनट के लिए भी सीधा नहीं रह पाता, तो उसका क्या होगा ? वर्ना अगर एक ही बार यदि यथार्थ सामायिक करो न,

तो आनंद की सीमा नहीं रहेगी। सभी पाप भस्मीभूत हो जाएँगे।

पाप से निवृत्त होना, वह है व्यवहार सामायिक

प्रश्नकर्ता : व्यवहार सामायिक में क्या होता है ?

दादाश्री : पाप से निवृत्त होना होता है। पाप से निवृत्त हुआ तो पुण्य अपने आप आ ही जाएगा। पाप से निवृत्त होता है तो पाप करना बंद हो जाता है, यह व्यवहार सामायिक है। ये सब लोग क्रमिक में जो सामायिक करते हैं, वह आरंभ नहीं है, परिग्रह नहीं है। बस वह बैठकर पुस्तक पढ़ता रहता है या और कुछ करता है लेकिन एक ही चीज़ में, पाप से निवृत्त होता है।

प्रश्नकर्ता : उससे पुण्य बढ़ता है न ?

दादाश्री : हाँ, पुण्य तो बढ़ता है न ! 48 मिनट तक अगर आप मन को खुद के घेरे में ही रखोगे तो पुण्य बढ़ेगा ही।

एक घंटे तक अगर मन को स्थिर किया जाए न तो बहुत अच्छा है। इससे मन की शक्ति बढ़ेगी और उतना अवकाश रहेगा। जितना अवकाश रहेगा उतने अगले जन्म के कर्म कम हो जाएँगे। मन को रोका, मन को स्थिर किया। इन सभी से पुण्यकर्म बंधता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या इसमें कर्मों की निर्जरा नहीं होती ?

दादाश्री : निर्जरा होती है लेकिन थोड़ी बहुत होती है। ज़्यादा निर्जरा तो नहीं हो सकती न ! पुस्तक पढ़कर तो सभी सामायिक करते हैं। पुस्तक पढ़ना अच्छा लगता है। लुटेरों की कहानी की किताबों पढ़ने के बजाय शास्त्र पढ़ता है। शास्त्रों में

भी इन्टरेस्ट (रुचि) आता है न! उससे बहुत आनंद आता है लेकिन उससे मिलता कुछ नहीं है। अगर आत्मा की यथार्थ सामायिक करोगे तब मिलेगा। 'आत्मा' बनकर एक बार 'आत्मा' बोलेंगे तो कल्याण हो जाएगा। आत्मा बनकर बोलना है। जब आपको ऐसा हो जाए कि मैं 'आत्मा' बन गया, उसके बाद बोलना है। एक ही मिनट के लिए अगर 'आत्मा' बन गए तो फिर बहुत हो गया।

आत्मरूप हो सकते हैं ज्ञानी की कृपा से

प्रश्नकर्ता : लेकिन आत्मरूप कैसे बना जा सकता है ?

दादाश्री : 'ज्ञानीपुरुष' तो कभी-कभार एकाध ही होते हैं और उनसे ज्ञान मिल जाए न, तब आत्मनुभव होता है। 'ज्ञानीपुरुष' तो जो चाहे सो कर सकते हैं, आपको नक्रद मोक्ष दे सकते हैं, क्योंकि खुद संपूर्ण अकर्ता हैं !

मोक्ष तो, यहीं पर नक्रद होना चाहिए। कोई कहे कि, 'आपकी देह छूटेगी, तब आपका मोक्ष होगा।' तो कहना कि, 'नहीं, ऐसा उधार मोक्ष मुझे नहीं चाहिए।' मोक्ष तो नक्रद चाहिए, यहीं पर सदेह मोक्ष बरतना चाहिए। इस अक्रम ज्ञान से नक्रद मोक्ष मिल जाता है और अनुभव भी होता है, ऐसा है !

सामायिक से बढ़ता है मनोबल

प्रश्नकर्ता : दादा, दूसरा यह जानना है कि रोज सामायिक करने से क्या फायदा होता है ?

दादाश्री : हाँ, लेकिन सामायिक खुद की समझ से न? भगवान द्वारा बताई हुई सामायिक नहीं न?

प्रश्नकर्ता : भगवान ने जिस प्रकार से कहा है हम उसी प्रकार से करते हैं।

दादाश्री : उस शीशी को देखते रहते हो कि रेत गिरी या नहीं गिरी ?

प्रश्नकर्ता : वह तो देखते हैं न कि टाइम पूरा हुआ या नहीं ?

दादाश्री : ऐसे नहीं देखना है। उसमें तो ऐसा होना चाहिए कि जब हम देखें तब शीशी खत्म हो चुकी हो। तब जानना कि सामायिक हुई। सामायिक इसलिए है कि उससे मनोबल बढ़ता है। रोज सामायिक करने से मन बलवान होता है और हमें खुद अपने आप पर श्रद्धा बैठती है।

यह शरीर ठीक रहे, जरा खून वगैरह का बहाव अच्छा रहे तो, वह फायदा होता है, नुकसान तो होता ही नहीं है। अच्छा कार्य करने से किसी तरह का नुकसान तो होता ही नहीं।

सामायिक में कीमत है भाव की, न कि क्रिया की

एक बार मैं टेबल पर चाय पी रहा था और पास में 75 साल के सेठ बैठे हुए थे, तब उन्होंने मुझसे कहा कि 'मुझे आपकी सूक्ष्म बातें सुनना बहुत अच्छा लगता है।' तो मैं उनसे जरा सूक्ष्म बातें करता था। बाद में वे सामायिक कर रहे थे तभी पास के कमरे में प्याला फूटा और सेठ को सुनाई दिया। मैं तो बहरा (कान से कम सुनाई देता था), इसलिए मुझे सुनाई नहीं दिया और सेठ तो तेज कानवाले, इसलिए उन्हें सुनाई दिया। सामायिक करते-करते सेठ ने पूछा, 'क्या फूटा?' मैंने कहा, 'आपका आत्मा फूट गया।' इसमें और क्या फूटना था? नहीं तो क्या स्त्री (पत्नी) गिरने से आवाज़ होती है? और कुछ भी नहीं फूटा! ये प्याले ही टूटे हैं। उसकी आवाज़ हुई है। तो सामायिक करते-करते सेठ ने जो पूछा, 'क्या फूटा?' तो इसे सामायिक कैसे कहेंगे? प्याले फूट गए, उसके लिए

इतनी हाय-हाय? क्या अभी भी सब जगह ऐसा होता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ। होता है।

दादाश्री : ऐसा? तो क्या उससे वे प्याले फिर से जीवित हो जाते हैं? क्यों नहीं होते, हमने सामायिक छोड़ी फिर भी?

प्रश्नकर्ता : सामायिक कर रहे हो और भूकंप आ जाए तब भी सामायिक नहीं छोड़नी चाहिए न?

दादाश्री : ऐसी सामायिक कौन करता है? ऐसी सामायिक कोई करता ही नहीं है न?

अतः यह जो सामायिक है, वह शरीर को स्थिर करने का साधारण प्रयोग है। शरीर स्थिर रहेगा तो संसार के लिए हितकारी होगा, लक्ष्मी वगैरह ज्यादा मिलेगी। जिसका शरीर एक पलभर के लिए भी स्थिर नहीं रहता, उसके पास लक्ष्मी कैसे आएगी? अतः वह सामायिक यथार्थ सामायिक नहीं है।

व्यवहार आत्मा राग-द्वेष रहित हो जाए वही सामायिक है। व्यवहार आत्मा सहज हो जाए, सहज स्थिति में आ जाए तो वह सामायिक है।

वह नहीं है यथार्थ सामायिक

कोई महाराज प्रतिक्रमण करते हैं, सामायिक करते हैं, व्याख्यान देते हैं, प्रवचन करते हैं लेकिन वह तो उनका आचरण है, वह स्थूल कर्म है, लेकिन अंदर क्या है वह देखना है। अंदर जो 'चार्ज' होता है वही वहाँ (अगले जन्म में) काम आएगा। अभी जिस आचरण का पालन करते हैं, वह 'डिस्चार्ज' है। पूरा बाह्याचार भी 'डिस्चार्ज रूपी' है। जबकि ये लोग कहते हैं कि, 'मैंने सामायिक की, ध्यान किया, दान दिया।' तो इन सब का यश इन्हें यहीं

पर मिल जाएगा, उससे अगले जन्म का क्या लेना-देना? भगवान कोई ऐसी कच्ची माया नहीं हैं कि तेरी ऐसी पोल को चलने दें।

बाहर सामायिक करता है और अंदर न जाने क्या करता है! एक सेठ सामायिक करने बैठे थे, तो बाहर किसी ने दरवाजा खटखटाया। सेठानी ने जाकर दरवाजा खोला। एक व्यक्ति आए थे, उन्होंने पूछा, 'सेठ कहाँ गए हैं?' तब सेठानी ने जवाब दिया कि 'कूड़ेखाने'। सेठ ने अंदर बैठे-बैठे यह सुना और अंदर झाँककर देखा तो वास्तव में वे कूड़ेखाने ही गए हुए थे! अंदर मन में तो खराब विचार ही चल रहे थे और बाहर सामायिक कर रहे थे। भगवान ऐसी गड़बड़ नहीं चलने देते। अंदर सामायिक रहे और बाहर अगर सामायिक न भी रहे तो उसका 'वहाँ' भगवान के पास चलेगा। ये बाहर का दिखावा 'वहाँ' पर नहीं चलता।

भगवान क्या कहते हैं? हम तेरी क्रियाओं को नहीं देखते हैं। वे तो उदयकर्म ही करवाता है। लेकिन सामायिक करते समय, प्रतिक्रमण करते समय, तेरा ध्यान कहाँ रहता है, उसी को देखा जाता है। सामायिक करता है लेकिन ध्यान तो घड़ी पर रहता है या शिष्य पर चिढ़ता रहता है और ऊपर से कहता है कि 'मैंने सामायिक की।'

कीमत ध्यान की, क्रिया की नहीं

भगवान महावीर के सामने आचार्य महाराज बैठे थे। उन्हें ज्ञान (आत्मज्ञान) दिया था। सिर्फ 'व्यवस्थित' का ही ज्ञान नहीं दिया था। वे महाराज सामायिक में बैठे थे तब अन्य महात्माओं ने पूछा, 'महाराज, इन आचार्य की कौन सी गति होगी?' भगवान ने कहा, 'इस समय देवगति में जाएँगे।' कुछ देर बाद फिर किसी ने पूछा 'महाराज, अब इस समय इन आचार्य की कौन सी गति होगी?' तब भगवान ने कहा, 'अधोगति में जाएँगे।' उसके

15 मिनट बाद फिर किसी ने पूछा, 'इस समय अब कौन सी गति में जाएँगे?' तब भगवान ने कहा, 'अब मोक्ष में जाएँगे।'

'ऐसा क्यों भगवान? ये संपूर्ण ध्यान में हैं, फिर भी ऐसा क्यों?' तब भगवान ने कहा, 'हमें जो दिखाई देता है, वह तुम्हें नहीं दिखाई देता और जो तुम्हें दिखाई देता है, उसे हम नहीं देखते। देखो, वह सामायिक में बैठा तो था, लेकिन उसका ध्यान कहाँ बरतता है, उसे हम ही देख सकते हैं। ध्यान में पहली बार देवगति का चित्रण (चिंतनधारा) था। दूसरी बार नर्कगति का चित्रण था। फिर उसने सुंदर चित्रित करना (चिंतन करना) शुरू किया। भीतर फोटो अच्छी निकलने लगी, जो ऐसी थी कि मोक्ष में ले जाए।' फल, ध्यान पर आधारित है। चित्रित करता है पुद्गल, लेकिन यदि उसमें 'खुद' तन्मयाकार हो जाए, तो वहाँ हस्ताक्षर कर देता है लेकिन तन्मयाकार नहीं हों, जागृति रखे और जो चित्रण होता हो, उसे यदि सिर्फ देखे व जाने तो वह उस चित्रण से मुक्त ही है।

जो द्रव्यक्रिया तू करता है, वह तो 'व्यवस्थित शक्ति' करवाती है, उसमें तेरा क्या है? भगवान कहते हैं कि, 'हम द्रव्यक्रिया पर ध्यान नहीं देते।' इस काल में द्रव्य का ठिकाना ही नहीं है, इसलिए सीधा भाव करो तो आगे बढ़ोगे।

अपध्यान से डलते हैं गलत भाव बीज

भगवान ने कहा है कि 'जीवमात्र चार प्रकार के ध्यान में ही रहा करते हैं। रौद्रध्यान, आर्तध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान।' शुक्लध्यान तो इस काल में है ही नहीं, ऐसा शास्त्रों का कथन है।

जो ध्यान रौद्र, आर्त और धर्मध्यान में समाविष्ट नहीं होता, वह है अपध्यान। पहले तो कुछ ही लोगों को अपध्यान रहता था, लेकिन अब तो चपरासी तक को अपध्यान रहता है। अपध्यान

तो दुर्ध्यान से भी निम्न कक्षा का है। अपध्यान इस काल में ही उत्पन्न हुआ है।

प्रश्नकर्ता : अपध्यान क्या है? वह विस्तारपूर्वक समझाइए।

दादाश्री : अपध्यान यानी जो चारों प्रकार के ध्यानों में नहीं समाए। भगवान के समय में चार प्रकार के ध्यान थे। उस समय में अपध्यान नहीं लिखा गया था। जिस समय जो अनुभव में नहीं आए न, वह लिखा जाए तो किस काम का? इसलिए अपध्यान तब नहीं लिखा गया था। इस काल में वैसे अपध्यान खड़े हो गए हैं। अपध्यान का अर्थ मैं समझाता हूँ आपको।

छूटने के हेतु से किए गए ध्यान को पद्धति अनुसार नहीं किया, वह अपध्यान में गया। सामायिक करते समय ध्यान रहता है कि 'मैंने किया,' कहता भी है कि 'मैंने किया' और फिर यह सामायिक करते समय घड़ी में देखता रहता है कि, 'अभी कितनी बाकी रही, अभी कितनी बाकी रही, कब पूरी होगी, कब पूरी होगी?' इस प्रकार ध्यान सामायिक में नहीं होता, लेकिन घड़ी में होता है! यों बार-बार घड़ी देखा करे, वह ध्यान कैसे कहलाएगा? इसे अपध्यान कहते हैं।

दुर्ध्यान हो तो चला सकते हैं। दुर्ध्यान यानी विरोधी ध्यान। सद्ध्यान मोक्ष में ले जाता है। और यह जो घड़ी देखते रहते हैं, वह तो अपध्यान कहलाता है। सीधा नहीं, उल्टा नहीं लेकिन तीसरे ही प्रकार का! घड़ी देखता रहता है, उसमें उसकी नीयत क्या है? एक व्यक्ति चिढ़कर खुद के अहंकार के पोषण के लिए गाँव जला देता है! लेकिन वह भी एक प्रकार का ध्यान कहलाता है। इन अपध्यानवालों को खुद के अहंकार की तो पड़ी ही नहीं होती, लेकिन जब भी ध्यान करता है वह अपध्यान ही करता है, यानी कि संपूर्ण अनर्थकारी।

न तो खुद के लिए, न ही मान के लिए, बिल्कुल मीनिंगलेस, बेमतलब! हेतु के बिना जो क्रिया की जाए, वह अपध्यान है।

भगवान ने कहा है कि सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान - जो कि आत्मिक क्रियाएँ हैं, उन्हें हमारी आज्ञानुसार सरल रहकर करना। हो सके तो सामायिक करना, बहुत नहीं हो सके तो कम करना, लेकिन सतर्कता से करना, ठीक से करना।

यह तो सामायिक करता है लेकिन घड़ी देखता रहता है! सामायिक करे, लेकिन घड़ी देखता रहे तो उल्टा भाव बीज डालता है।

क्रिया करते समय ध्यान कहाँ रहता है?

प्रश्नकर्ता : किसी ने 100 नवकार मंत्र करने के लिए कहा हो तो ध्यान इसी में रहता है कि 100 कब पूरे होंगे।

दादाश्री : हाँ, वहाँ जल्दबाजी ही रहती है। सामायिक में भी उस शीशी को ही देखता रहता है! फिर जिसे पौषध कहा जाता है, उसमें भी क्या करते हैं उपाश्रय में रहकर? दूसरी जातिवाले कहते हैं, 'हम बैल को पानी पिलाने जाते हैं, तब पोषो-पोषो कहते हैं न, उसी प्रकार ये पानी पिलाकर आए।' पौषध व्रत अर्थात् आत्मा को पोषण देना। घर से निकलकर उपाश्रय में रहकर साधु जीवन जीना। उस समय आत्मा को पोषण देता है, सारा बाह्य व्यवहार एक तरफ रख देना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : पूजा-सेवा करना धर्मध्यान कहलाता है न?

दादाश्री : नहीं, उसे धर्मध्यान नहीं कहते। पूजा-सेवा करते समय आपका ध्यान कहाँ बरतता है, वह देखा जाता है। भगवान क्रिया को देखते ही नहीं, लेकिन क्रिया के समय ध्यान कहाँ बरत रहा है, वह देखते हैं।

सामायिक कर रहे हों, माला फेर रहे हों, लेकिन यदि ध्यान अन्यत्र गया, तो उस क्रिया का फल नहीं देखा जाता, लेकिन उस समय खुद जिस ध्यान में बरत रहा है, वही देखा जाता है।

प्रश्नकर्ता : आजकल तो बहुत क्रियाएँ करवाते हैं।

दादाश्री : हाँ, उन क्रियाओं का फल संसार है। किसी भी क्रिया का फल मोक्ष नहीं है। 'मैं कर रहा हूँ,' उस भान से तो संसार में आगे के कर्म बंधते जाते हैं। फिर चाहे कुछ भी करें, 'मैं कर रहा हूँ' इस भान के साथ जप कर रहा हूँ या तप कर रहा हूँ, क्रियाकांड कर रहा हूँ, फलाँ कर रहा हूँ, सामायिक कर रहा हूँ, प्रतिक्रमण...ये सब सामायिक प्रतिक्रमण वगैरह क्रियाकांड कहलाते हैं। अगर भगवान की एक ही सामायिक की होती न तो बहुत था। यहाँ पर हम करवाते हैं ऐसी सामायिक।

जिसमें ध्यान रहा, वह काम का

प्रश्नकर्ता : हम सामायिक करते हैं, प्रतिक्रमण करते हैं, सभी क्रियाएँ करते हैं लेकिन उसमें ध्यान नहीं रह पाता है।

दादाश्री : उसमें ध्यान नहीं रहा तो फिर किस काम का? ध्यान रहे तो काम का है और ध्यान न रहे तो काम का नहीं है। आपका ध्यान किस में रहता है?

प्रश्नकर्ता : संसार की तरफ चला जाता है।

दादाश्री : संसार में भी क्या पसंद है? लेकिन यहाँ से जाकर दूसरी जगह बैठेगा तो सही न? आपका मन किसमें जाता है?

प्रश्नकर्ता : जो काम कर रहे होते हैं, घर में कोई कामकाज हो उसमें चला जाता है।

दादाश्री : तो फिर आप वह काम करना। जहाँ ध्यान बैठे वह काम करना। जहाँ ध्यान न बैठे उसका क्या करना है? सारी मेहनत बेकार जाएगी और कुछ मिलेगा भी नहीं।

जिसकी कीमत ज्यादा, चित्त वहीं पर जाता है

प्रश्नकर्ता : ऐसा जो निश्चय किया है कि रोज़ क्रिया करनी है तो फिर उसका क्या होगा?

दादाश्री : बेकार जाएगा, वह सारी मेहनत बेकार जाएगी। कम मेहनत करो लेकिन ऐसी करो कि काम में आए और आप संसार में अच्छी तरह रहो न!

इसी की सामायिक करो। संसार में बच्चों का अच्छी तरह पालन करना, उन्हें डाँटना नहीं, झगड़ना नहीं, उन पर क्रोध नहीं करना, वह सारी सामायिक ही है न! आप अपने बच्चे की सामायिक करो, पति की सामायिक करो, सास की सामायिक करो, जेठानी की सामायिक करो, ऐसी सारी सामायिक करो न! यह सामायिक करने से क्या मिलेगा? यदि मन लगे तो सामायिक करना काम का है। मन नहीं लगे और सामायिक करो तो किस काम का?

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह तो रोज़ की क्रिया है इसलिए रोज़ क्रिया करते ही रहते हैं न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन क्रिया करने में यदि मन नहीं लगता तो फिर करने की ज़रूरत क्या है? चित्त ठिकाने पर रहना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : चित्त नहीं रहता।

दादाश्री : तो क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : वही आपसे माँगने आए हैं।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि यह (सामायिक)

पसंद नहीं है! बच्चे वगैरह बाकी सब पसंद है। जहाँ अच्छा लगता है चित्त वहीं पर जाता है। बच्चों की कीमत कम कर दो और इसकी कीमत बढ़ा दो तो कुछ हो जाएगा, नहीं तो कैसे हो जाएगा?

यदि सामायिक करनी ही है तो पछतावे की सामायिक करो न! किस चीज़ का पछतावा करना है? जिस-जिस के गलत पैसे लिए हैं उसके लिए पछतावा करो, जहाँ-जहाँ दृष्टि बिगाड़ी हो उसका पछतावा करो।

प्रश्नकर्ता : तो सामायिक में नवकार नहीं बोलने हैं?

दादाश्री : अरे! नवकार बोल-बोलकर तो यह दशा हुई है! एक भी नवकार यथार्थ रूप से नहीं किया। वह किसके द्वारा दिया गया है, वह देखना है या नहीं?

सामायिक अर्थात् आरंभ-परिग्रह रहित

सामायिक अर्थात् आरंभ रहित। एक घंटे तक आरंभ-परिग्रह रहित रहना ही सामायिक है। और आरंभ शब्द बोलते ज़रूर हैं, लेकिन लोग समझते क्या है? समरंभ, ऐसा कहते ज़रूर है लेकिन समरंभ क्या है, वह नहीं समझते। बड़े-बड़े पंडित भी नहीं समझते कि किस डिग्री तक समरंभ कहलाता है और फिर कौन-सी डिग्री से आरंभ कहलाता है, वे डिग्री को नहीं जानते। इतना ही है कि वे सिर्फ शब्द बोलते हैं। शब्द शास्त्रों के ही हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या समरंभ से भी कर्मबंधन होता है?

दादाश्री : समरंभ ही कर्म है। वह पहला कर्म है। वह मानसिक कर्म कहलाता है। समरंभ को मन और वचन दोनों का कर्म कहा जाता है और आरंभ, मन-वचन-काया तीनों का कर्म कहलाता है। यह ज्ञान लेने के बाद में अगर आप

किसी को गालियाँ दे आओ, ऐसा आरंभ कर आओ फिर भी वह आपको स्पर्श नहीं करेगा, ऐसा है यह विज्ञान! सिर्फ इस तरह गाली देने के लिए, सामनेवाले को दुःख हुआ इसलिए आपको चंदूभाई से इतना कहना पड़ेगा, 'यह अतिक्रमण क्यों किया? अर्थात् प्रतिक्रमण करो।' आपको इतना ही करना है। आपको दुःख देने का भाव है ही नहीं। किसी को दुःख देकर हम मोक्ष में नहीं जा सकते, हमारे पास चाहे कैसा भी विज्ञान हो, फिर भी।

प्रश्नकर्ता : समरंभ से जो कर्मबंधन होता है वह कम होता है और जब तीनों एक साथ हों तब ज्यादा होता है ?

दादाश्री : समरंभ ही कर्म कहलाता है न! समरंभ अर्थात् सिर्फ मन से ही। जब वास्तव में वैसा हो जाता है तब बहुत बड़ा कर्म कहलाता है। इसीलिए भगवान ने उसे आरंभ कहा है।

प्रश्नकर्ता : मन से कर्म करके फिर वहीं पर रुक गया तो वह बहुत बंधन में नहीं पड़ेगा न ?

दादाश्री : बहुत नहीं रहेगा। फिर सिर्फ विचार करके छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : शास्त्रों में उस आरंभ-परिग्रह की सीमा बनाने को कहा गया है। अगर वह बनाई जाए तो क्या फर्क पड़ेगा और न बनाए तो क्या फर्क पड़ेगा ?

दादाश्री : अगर बनाएगा तो यह कर्म कम आएगा। इस जन्म में बनाएगा तो अगले जन्म में कर्म कम आएँगे। ऐसे करते-करते, सीमा बनाते-बनाते, कम करते-करते आगे बढ़ता जाएगा।

यथार्थ सामायिक से मोक्ष

प्रश्नकर्ता : सामायिक प्रतिक्रमण वगैरह सब धर्मध्यान करने से मोक्ष का मार्ग मिलेगा ?

दादाश्री : मिलेगा, लेकिन अभी जो चल रहा है, उस सामायिक और प्रतिक्रमण से नहीं मिलेगा। यह तो सही माल नहीं है। यथार्थ सामायिक हो तो एक ही सामायिक करने से मोक्ष हो जाएगा। अभी इसमें किसी का दोष नहीं है। इस काल का स्वभाव ही ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : यह कैसे पता चलेगा कि हम गलत सामायिक कर रहे हैं? हम तो इसी आशय से करते हैं ना कि ठीक कर रहे हैं?

दादाश्री : आत्मा की पहचान होने के बाद ही यथार्थ सामायिक होती है। तब तक यथार्थ सामायिक नहीं हो सकती। तब तक वह मन स्थिर करने का साधन है, देह को स्थिर करने का साधन है। यों भी वह लौकिक सामायिक है! जबकि यह अलौकिक सामायिक, 'व्यवहार आत्मा' को स्थिर करने के लिए है। यहाँ पर हमारे ज्ञान देने के बाद में 'व्यवहार आत्मा' को स्थिर किया जा सकता है न! जाने बिना कैसे हो सकेगा? अपने यहाँ पर ज्ञान लेने के बाद में, वह 'व्यवहार आत्मा' को स्थिर करता रहता है। यहाँ पर बहुत जागृति है जबकि वहाँ (लौकिक में) जागृति है ही नहीं।

जो स्वभाव से चंचल है, वह स्थिर कैसे हो सकेगा ?

अभी जिसे जो 'आत्मा' मान बैठे हैं न, वह तो 'मिकेनिकल आत्मा' है, वास्तव में वह आत्मा नहीं है और 'मिकेनिकल आत्मा' को ही स्थिर करना चाहते हैं, अरे, यह तो 'मिकेनिकल' है, स्थिर होगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : यह जो 'व्यवहार आत्मा' है न, वह 'मिकेलिकल आत्मा' है। 'मिकेनिकल चेतन'

यानी कि जो खाए-पीए, श्वास ले, वह। क्रमिकमार्ग में 'मिकेनिकल आत्मा' को ही आत्मा माना गया है। 'मिकेनिकल चेतन' को ही आत्मा माना गया है।

अब अगर 'मिकेनिकल आत्मा' को खुद का आत्मा मान ले तो कब ठिकाना पड़ेगा? इसीलिए मैं कहता हूँ न कि आत्मा क्या है, वह जगत् ने जाना ही नहीं है। और जो आत्मा नहीं है, वहीं पर आरोपण किया है। कि यह जो सोचता है वह आत्मा है, यह हिलता है, चलता है, बोलता है, करता है, कूदता है, हँसता है, गाता है, खाता है, पीता है, व्यापार करता है, लड़ता है, सोता है, वह आत्मा है। ये लोग ऐसा कहते हैं कि जो सामायिक करता है, जप करता है, तप करता है, धर्मध्यान करता है, देवदर्शन करता है, वही आत्मा है। तो मेरा क्या कहना है कि वहाँ पर आत्मा बिल्कुल भी नहीं है। अब जहाँ पर लेखे की रकम में ही इतनी सारी बड़ी-बड़ी भूलें होती हैं, तो उसकी बेलेन्स शीट बन पाएगी क्या?

यह मिकेनिकल आत्मा चंचल स्वभाव का है। उसका स्वभाव ही चंचल है। अगर उसे स्थिर करने जाओगे तो मूर्ख बनोगे। यह मिकेनिकल आत्मा स्थिर नहीं होगा। आत्मा जानने के बाद में तू सामायिक कर।

प्रश्नकर्ता : जिसमें स्थिरता का गुण नहीं है, वह स्थिर कैसे हो पाएगा?

दादाश्री : उसे स्थिर नहीं करना है। उसका तो सिर्फ अभ्यास ही करना है कि मन स्थिर रहता है या नहीं? अर्थात् सिर्फ देखना ही है। मन को स्थिर करने के लिए सामायिक करते हैं तो कुछ समय के लिए शरीर सीधा रहता है, कुछ समय के लिए मन सीधा रहता है। वह (सामायिक) उसे (मन को) ज़रा सा स्थिर रखने के लिए ही है।

मत लेना उदयकर्म में गर्व

पूरा जगत् प्राकृत गुणों में ही है। पूरा जगत् लट्टू छाप है। यह तो प्रकृति सामायिक-प्रतिक्रमण करवाती है और खुद के सिर पर लेता है और कहता है कि 'मैंने किया'। और अगर भगवान से पूछें तो भगवान कहेंगे कि, 'इनमें से तू कुछ भी नहीं करता है।' कभी अगर पैर दुःखने लगे तो कहेगा, 'मैं क्या करूँ?'

कोई कहेगा कि 'आज मैंने चार सामायिक कीं और प्रतिक्रमण किया और दो घंटे शास्त्र पढ़े।' अरे, भाई, यह भी प्रकृति करवाती है और तू कहता है कि 'मैंने किया'। यदि तू ही सामायिक का कर्ता है, तो अगले दिन भी करके दिखा न! अगले दिन तो कहेगा कि 'आज तो मुझसे नहीं हो रहा!' और कल ऐसा कहा था, 'मैंने किया,' तो कितना बड़ा विरोधाभास है! यदि तू ही करनेवाला है, तो 'नहीं हो रहा', ऐसा कभी भी बोल ही नहीं सकता। 'नहीं हो रहा,' इसका मतलब यही है कि तू करनेवाला नहीं है। पूरा संसार ऐसी उलटी समझ के कारण अटका हुआ है। त्याग करता है, वह भी प्रकृति ही करवाती है और ग्रहण करता है, वह भी प्रकृति ही करवाती है। इस ब्रह्मचर्य का भी प्रकृति जबरन पालन करवाती है, फिर भी कहता है कि 'मैं ब्रह्मचर्य पालन कर रहा हूँ।' कितना बड़ा विरोधाभास!

यह सब प्रकृति जबरन करवाती है और कहता है कि 'मैंने किया!' और इसीलिए तो वह अगले जन्म के बीज डालता है। यह तो उदयकर्म से होता है और खुद उसका गर्व लेता है। जो उदयकर्म का गर्व ले, उसे साधु कैसे कहेंगे? साधु महाराजों की एक यही भूल है कि वे उदयकर्म का गर्व लेते हैं। यदि भूल होती है और अगर उस एक भूल को ही मिटा दें, तो काम हो जाएगा। महाराज को सिर्फ इतना ही देखना है कि उन्हें उदयकर्म का

गर्व होता है या नहीं? बाहर का अन्य कुछ नहीं देखना है। उनमें दूसरे कषाय होंगे तो चलेगा, लेकिन उदयकर्म का गर्व नहीं होना चाहिए।

भगवान महावीर ने कहा है कि अगर 'उदयकर्म का गर्व नहीं करेगा तो हमारे दर्शन पाएगा।' जो ऐसा मानता है कि गर्व करेगा और दर्शन पाएगा, तो वह कभी भी प्राप्ति नहीं कर पाएगा। इसमें (क्रमिक में लोगों को) उदयकर्म सामायिक करवाते हैं।

करते हैं संयोग, और मानता है कि 'मैंने किया'

गर्व यानी क्या? आपको समझाऊँ। कोई आपसे कहे, 'मैंने चार सामायिक की।' तो उस घड़ी उसके चेहरे पर यों बहुत आनंद दिखाई देता है। और अगर हम पूछें, 'इसने कितनी सामायिक की?' तब वह कहता है, 'इससे नहीं होती है। एक ही की है इसने।' उससे पता चल जाता है कि इस व्यक्ति को सामायिक करने का इगोइज्जम है, इसलिए दूसरों के दोष निकाल रहा है, 'वह एक ही करता है और मैं चार करता हूँ।'

फिर हम पूछें, 'साहब, चार सामायिक आपने की हैं!' तब वह कहता है, 'और कौन है करनेवाला? मैं ही हूँ न करनेवाला!' तब हम समझ जाते हैं न कि इसे कितना कैफ है! मन में खुद को न जाने क्या मान बैठा होता है! फिर जब दूसरे दिन हम पूछें, 'क्यों, आज कितनी सामायिक की हैं?' तब वह कहेगा, 'आज तो पैर दुःख रहे हैं, नहीं की।' वर्ना कहेगा, 'मेरा सिर दुःख रहा है।' तो कल सामायिक पैर ने की थी या आपने की थी? किसने की थी? यदि आपने की हो तो पैर का बहाना मत बनाओ। यह तो, पैर ठीक है, सिर ठीक है, पेट में नहीं दुःख रहा इसलिए सामायिक हुई। सबकुछ 'रेग्युलर' (नियमानुसार) हो, सभी संयोग सीधे हों तब हो पाती है।

मतलब पैर ठिकाने पर होने चाहिए, मन ठिकाने पर होना चाहिए, बुद्धि ठिकाने पर होनी चाहिए, जब सभी संयोग ठीक होंगे तब सामायिक होगी, और अहंकार भी ठिकाने पर रहना चाहिए। अहंकार भी उस घड़ी ठिकाने पर न हो तो कार्य नहीं होगा, यदि तय किया हो कि आज इतनी देर सामायिक करनी है, तो या तो सिर दुःखने लगता है या पेट दुःखने लगता है। तो उतना भी नहीं करने देते। दिमाग ठिकाने पर होना चाहिए। अरे! जगह भी अच्छी होनी चाहिए। जगह अच्छी नहीं होगी तो भी नहीं हो सकेगी। यानी जब यह सबकुछ साथ में होगा तब कार्य होगा।

उसमें आप किसलिए सिर पर लेते हो? यानी यह परसत्ता ने किया है, इसमें आपका क्या है? यों सिर पर लेता है या नहीं? लेकिन यह तो सिर्फ 'इगोइज्जम' (अहंकार) करता रहता है। यह सबकुछ करता है, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स।' लेकिन वह 'खुद' कहता है, 'मैं कर रहा हूँ,' यह है गर्वरस! और जब तक गर्वरस चखने की आदत है न, तब तक यह संसार खड़ा रहेगा। बात तो समझनी पड़ेगी न? यों ही गप्प चलेगी क्या?

सामायिक के कर्ता आप नहीं हो, प्रतिक्रमण के कर्ता आप नहीं हो। यह सब तो उदयकर्म करवा रहे हैं जबकि लोग नासमझी से ऐसा कहते हैं, कि 'मैंने किया, मैं कर रहा हूँ।' ऐसा सारा अज्ञान घुस गया है।

पाँच सामायिक करे तो कहता है, 'मैंने पाँच की' ऐसा कहकर गर्वरस लेता है। वास्तव में क्या कहना चाहिए कि 'भगवत् कृपा से पाँच सामायिक हुई।' उसका गर्वरस नहीं लेना चाहिए।

जो सामायिक नहीं करते हैं 'वे समझदार (दिखाई देते) हैं और जो सामायिक करते हैं उनके मन में कैफ बढ़ता है कि मैंने सामायिक

की। यह प्रतिक्रमण किया।' लेकिन उससे कुछ हासिल नहीं होता। भगवान की एक भी क्रिया ऐसी नहीं है कि जिससे कैफ चढ़े, सभी क्रियाएँ ऐसी हैं कि कैफ उतर जाए। सामायिक शब्द बोलते ही, सामायिक करने गए कि वहाँ पर कैफ उतर जाना चाहिए।

गर्वरस से उपजता है तिरस्कार

प्रश्नकर्ता : जन्म से ही लेकर आए हैं न?

दादाश्री : हाँ, जन्म से ही लेकर आए हैं, लेकिन ऐसा भान नहीं रहता है न! और गर्वरस ही चखता रहता है। 'उसे' गर्वरस चखना बहुत पसंद है। ऐसा कहता है कि 'मैंने चार सामायिक की' और ऐसे 'टाइट' हो जाता है। 'मैंने दो की, उसने तो एक भी नहीं की' वह स्पर्धा है। अरे, भाई कैसे आदमी हो? सामायिक में भी स्पर्धा? क्या यह रेस-कोर्स है? लेकिन सामायिक को समझते ही नहीं हैं। सामायिक किसे कहते हैं इतना भी नहीं समझते न।

जिसने एक सामायिक की हो, उस पर दया खाता है। कहता है, 'इस बेचारे से हो नहीं पाता।' पहले उसे दया आती है और फिर तिरस्कार यह सब गर्वरस की वजह से है। वह अपनी ही भूल है न? उसमें भगवान क्या करें? इसलिए कृपालुदेव ने कहा है,

'दस वर्ष रे धारा उल्लासी, मट्यो उदयकर्मनो गर्व रे!'

क्या एक भी इंसान ऐसा समझता है कि उदयकर्म का गर्व क्या है? हिंदुस्तान में कौन समझ सकता है इसे! यह तो जब हम समझाएँ तब समझ में आता है।

उदयकर्म अर्थात् 'यह सामायिक उदयकर्म कर रहा है और मैं नहीं कर रहा हूँ।' तो उसे गर्व

नहीं होगा। लेकिन लोग तो गर्वरस चखे बगैर रहते नहीं न! चखते हैं या नहीं?

संसार खड़ा है गर्वरस से

वह तो ऐसा मानता है कि, "सामायिक, जप, तप और योग 'मैं' ही करता हूँ। 'मैं' ही आत्मा हूँ और 'मैं' ही यह करता हूँ।" अब 'करता है' शब्द आया, तभी से वह मिथ्यात्व है! 'करोमि, करोसि और करोति' वह सारा मिथ्यात्व में है!

इस गर्वरस को चखने से ही कैफ बढ़ता जाता है। फिर कैफ का आदी हो जाता है। तो अब कैफ कैसे उतरेगा? मोह का जो कैफ चढ़ गया है, वह किस तरह से उतरेगा? नुकसान होता है, वह भी अनिवार्य है और फायदा (मुनाफा) होता है वह भी अनिवार्य है। लेकिन जब फायदा होता है तब कहता है, 'मैंने कमाया,' और नुकसान हो जाए तब कहेगा, 'भगवान ने किया।' 'माइ स्टार्स आर नॉट फेवरेबल।' (मेरे ग्रह अच्छे नहीं हैं।)

इस तरह उसे यह गर्वरस चखना है। यह एक प्रकार का इतना मीठा रस है। उसे यह गर्वरस चखना है और गर्वरस की वजह से ही यह संसार खड़ा है। व्यसन की वजह से, बीड़ियों की वजह से या चाय की वजह से नहीं खड़ा है यह संसार, लेकिन इस गर्वरस से खड़ा है। सिर्फ यही रस ऐसा है कि जिसे छोड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

गर्व लेने से क्या हुआ? गरदन फँसी। मोक्ष तो कहाँ गया, लेकिन मोक्ष के लिए तो लाख जन्मों के अंतराय डाल दिए तूने। सामायिक का गर्व किया इसलिए! संसार का भी गर्व होता है। कहेगा, 'हम फलानी जगह पर गए।' ओहोहो, वहाँ जाने में भी गर्व लिया! जैसे न जाने क्या कमा लिया! जैसे चिंता खत्म हो गई हो! इसे कहते हैं गर्व।

इसीलिए इन लोगों ने कहा है कि 'यही गले में फाँसी है।' 'यह सामायिक की, प्रतिक्रमण किया, मैंने यह त्याग दिया,' ऐसा कहा तो वह आपके गले में फाँसी है। तूने गर्वरस चखा!

ज्ञानीपुरुष हैं गर्व रहित

अब, सत्पुरुष में गर्व नहीं होता, इसका क्या मतलब है? वे खुद अपने हाथों से चाहे कितनी भी शांति दें, फिर भी उन्हें ऐसा गर्व नहीं होता कि 'मैं दे रहा हूँ, मैं यह शांति दे रहा हूँ' ऐसा नहीं रहता। वह ऐसा जानते हैं कि 'मैं तो निमित्त हूँ और उसके घर की (उसकी खुद की) शांति उसके लिए अनावृत कर रहा हूँ।'

अर्थात् उन्हें गर्व नहीं रहता किसी भी चीज़ का क्योंकि अगर अहंकार ही नहीं है तो गर्व कहाँ से होगा? जहाँ अहंकार है, वहाँ गर्व रहता ही है। अतः उनमें गर्व नहीं होता।

अब हममें वह गर्व नहीं है। हमें ऐसा रहता ही नहीं कि 'कोई क्रिया मैंने की है,' अब, ये लोग इसके (क्रिया के) कर्ता का रस चखते हैं, इसलिए जी पाते हैं। अभी भी शास्त्र पढ़नेवाले बड़े-बड़े लोग हैं लेकिन वे इसी आधार पर जीते हैं कि 'मैंने किया'। उसी की मस्ती में!

इस गर्वरस के सामने उन्हें और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। गर्वरस बहुत पसंद है उन्हें। कहता है, 'मैंने त्याग किया, स्त्री का त्याग किया, करोड़ों रुपए छोड़कर आया हूँ, तो मोक्ष के लिए ही आया होऊँगा न!' तब मैंने कहा, 'किसलिए, वह तो आप समझो। आपको अभी तक कौन सा रस चखना पसंद है, क्या उसका पता चलता है? रुपए का रस अच्छा नहीं लगता लेकिन दूसरे भी तो तरह-तरह के रस होते हैं न और तरह-तरह की कीर्तियाँ होती हैं न।' जब तक कोई गर्वरस

चखता है, तब तक उसे मोक्ष की बात नहीं करनी चाहिए।

शराबी पर तो, अगर हम पाँच-सात बालटी पानी डालें न तो कैफ उतर जाता है या नहीं? फिर क्या कहता है बेचारा कि, 'साहब, मेरे जैसा मूर्ख कोई है ही नहीं, मैं कुछ भी नहीं समझता हूँ। और साहब, मुझे मारना हो तो मारो लेकिन मुझे कुछ दे दो!' मैं तो सब से पहले उसे मोक्ष दूँगा, क्योंकि मोक्ष देने के लायक हो गयाम कहलाएगा। मोक्ष के लिए इतनी ही योग्यता चाहिए!

आत्मा है एक जानने योग्य वस्तु

जैसे कोई बहुत थका हुआ व्यक्ति अगर थकान दूर करने बैठ जाए तो क्या हमेशा बैठा रहेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : यह भी वैसा ही है। यह सामायिक भी थकान जैसा है। बाकी यह मशीनरी तो रात-दिन चलती ही रहती है। और ये (ज्ञान लिए हुए महात्मा) निरंतर सामायिक में रहते हैं। एक क्षण के लिए भी सामायिक से बाहर नहीं। इस संसार में घर बैठे, बीबी-बच्चों के बीच रहकर भी निरंतर सामायिक में रहते हैं।

और 'आत्मा' ही सामायिक है। ये दूसरी सभी सामायिकें, 'व्यवहार सामायिक' हैं। यथार्थ सामायिक प्राप्त करने के हेतु से यह 'व्यवहारिक सामायिक' करनी है। वह व्यवहारिक सामायिक भी अधिकृत पुरुष द्वारा दी हुई होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अधिकृत पुरुष की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : अधिकृत पुरुष यानी, उदाहरण के तौर पर यह थाने, जिले के कलेक्टर ने यदि आपको

कोई ऑर्डर लिख दिया हो कि इतनी ज़मीन आपके हवाले की जाती है। अब वे तो वास्तव में कलेक्टर ही हैं, लेकिन अगर कलेक्टर न हों और उनके द्वारा लिखा हुआ ऑर्डर हो तो? नीचे कलेक्टर लिखकर सिक्का (थप्पा) मारा हो और कलेक्टर न हो तो? वहाँ नहीं चलेगा, आगे चलेगा ही नहीं। उसी तरह ये सारे कलेक्टर जो सामायिक लिखकर देते हैं न, वे अधिकृत पुरुष नहीं हैं।

इस दुनिया में यदि कोई जानने जैसी चीज़ है तो वह आत्मा है। और आत्मा को जाननेवाले लोग (आत्मज्ञानी) इस दुनिया में मुश्किल से एक या दो ही होते हैं। हर कोई आत्मा को नहीं जान सकता। मनुष्य बाकी सभी कुछ जान सकता है, लेकिन आत्मा को नहीं जान सकता। और जो आत्मा को जान ले न, उसे केवलज्ञान होने में देर लगेगी ही नहीं।

आत्मा जाना जा सकता है ज्ञानी के माध्यम से

अब यदि वे आत्मा को 'ज्ञानीपुरुष' के माध्यम से जानेंगे तब आत्मा प्राप्त होगा, वर्ना आत्मा कभी भी प्राप्त नहीं होगा। 'ज्ञानीपुरुष' ने आत्मा देखा है, जाना है, अनुभव किया हुआ है और 'खुद' 'आत्मा' स्वरूप ही रहते हैं। इसलिए जब ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' से वह 'खुद' 'आत्मा' को जानेगा, तब काम होगा।

जब 'ज्ञानीपुरुष' से ऐसा आत्मा जानने बैठा है, तब 'ज्ञानीपुरुष' की (एक घंटे की) सामायिक से पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। और जब पाप भस्मीभूत हो जाएँ, तभी आत्मा की जागृति आती है, नहीं तो जागृति नहीं आ पाती। और फिर वह जागृति निरंतर रहती है, नहीं तो दुनिया की कोई भी चीज़ निरंतर याद ही नहीं रहती, थोड़ी देर याद रहती (आती) है और फिर वापस भूल जाते हैं।

एकात्मवृत्ति से आत्मा में सुख की श्रद्धा

प्रश्नकर्ता : सामायिक करते हैं तभी हम में एकाग्रता या ध्यान आता है न? अगर हम क्रिया करने बैठें ही नहीं तो ध्यान कैसे हो पाएगा? ऐसा कहते हैं कि पहले क्रिया होती है, तो क्या पहले ध्यान में एकाग्रता होनी चाहिए?

दादाश्री : शुद्धात्मा की जागृति के साथ सामायिक ध्यान होगा, यदि तीनों की एकात्मवृत्ति होगी तो ठीक है। मन-वचन-काया एकात्म हों, तो ठीक है, नहीं तो सब कुछ गलत है। ऐसी कितनी ही (सामायिक) बेकार गई और बेकार की!

प्रश्नकर्ता : तो क्या उस समय सामायिक करने बैठना ही नहीं चाहिए?

दादाश्री : भगवान ने सामायिक किसे कहा है? सब से उत्तम सामायिक किसे कहा जाता है? शुद्धात्मा की सामायिक को कहा जाता है। शुद्धात्मा का ध्यान, वह शुक्लध्यान है और हमेशा के लिए वही सामायिक है। अपने यहाँ अक्रममार्ग में तो निरंतर सामायिक है। अपने यहाँ शुक्लध्यान है, शुद्धात्मा का ध्यान है। उसके बाद और कोई ध्यान करने को नहीं रहता। ये सभी जो तरह-तरह के ध्यान करवाते हैं, वह निरी मादकता है। अनर्थकारी है सब।

आपको ऐसा तय कर लेना है कि 'मैं चंदू हूँ' वह ध्यान है या फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह ध्यान है?

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' वह।

दादाश्री : वही निरंतर की सामायिक है। हमें नींद में भी सामायिक रहती है। बाकी की सब सामायिक तो प्रैक्टिस है, प्रैक्टिस से आत्मा में सुख है ऐसी जाँच करने के लिए वह सामायिक है। सब से पहले तो श्रद्धा ही नहीं बैठती। अंदर सुख है ऐसी श्रद्धा ही नहीं बैठती। बाहर का सुख देखता है। यह सामायिक अंदर की श्रद्धा बिठाने के लिए

है। उसमें यदि ये मन-वचन-काया एकाकार हो जाएँगे तभी काम होगा, नहीं तो काम नहीं होगा। अतः मन-वचन-काया की एकाग्रता हो, तभी अंदर सुख बरतता है। तब ऐसा मानता है कि बाहर का कुछ नहीं खाया, कुछ नहीं पिया, पाँच इन्द्रियों से कुछ नहीं भोगा फिर भी अंदर से सुख आ रहा है। अतः उसे इस बात पर श्रद्धा बैठ जाती है कि अंदर आत्मा में सुख है ही। जैसे-तैसे करके दर्शन को आगे बढ़ाता है। ऐसा करते-करते समकित हो जाता है। चार अनंतानुबंधी टूटने से समकित होता है, वर्ना नहीं होता।

अतः व्यवहार में (क्रमिक में) तो यों करते-करते ही आगे कदम बढ़ाने हैं। जरा-सा आनंद आए तो आत्मा पर श्रद्धा बैठती जाती है कि 'अरे इस घर के बारे में माथापच्ची करते रहते हैं,' तो उसे दुःख होता है, जबकि इसमें आनंद आता है। अतः आत्मा पर श्रद्धा बैठती जाती है, बढ़ती जाती है। बहुत बढ़ गई है न आत्मा पर श्रद्धा? अंदर आत्मा में सुख है ऐसा पता चल गया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लगता है, लेकिन थोड़ा बहुत लगता है।

क्रमिकमार्ग के ज्ञानियों की सामायिक

दादाश्री : तो सामायिक किसे कहते हैं? ये तो व्यवहार सामायिक को ही सामायिक कहते हैं। और उससे भी आगे ये क्रमिकमार्ग के ज्ञानियों की सामायिक किसे कहा जाता है? ध्याता-ध्येय और ध्यान तीनों की एकता हो जाएँ, उसे सामायिक माना जाता है। ज्ञानियों की सामायिक वह है जिसमें शुद्धात्मा को ध्येय मानते हैं। खुद ध्याता है और ध्यान सेट करते हैं, उसी को सामायिक कहते हैं। वह ज्ञानियों की सामायिक है अर्थात् ध्येय के रूप में शुद्धात्मा को रखना पड़ता है और खुद ध्याता है। खुद चंदूलाल है और खुद ही ध्याता। ध्येय क्या है?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : शुद्धात्मा! वे इसका शब्दरूपी ध्यान देंगे। (क्रमिकमार्ग के) ज्ञानी भी! यथार्थ शुद्धात्मा की तो बात ही नहीं है। शुद्धात्मा को शब्दों से ही जानते हैं। यानी कि शब्द ब्रह्म, शब्द आत्मा को (जानते हैं) और उसी का ध्यान करते हैं कि, मैं यह हूँ, 'मैं चंदूलाल नहीं हूँ।' ज्ञानी जिसे 'मैं' कहते हैं, वैसा, यह देखनेवाला मैं आत्मा हूँ। वे ऐसा ध्येय सेट करते हैं। 'शुद्धात्मा' को शब्द से ध्येय बनाते हैं। गुणधर्मों से उस शब्द को जितना जाना है उतना शास्त्रों द्वारा सभी गुणधर्म नहीं जाने जा सकते। जितने जाने हों, उतने ध्येय बनाते हैं और फिर खुद उसका ध्यान करता रहता है। खुद ध्याता है और वे ध्येय हैं और फिर दोनों का मल्टिप्लिकेशन होता है। फिर दोनों के साथ जब संसार भूल जाता है और उस ध्येय में ही तन्मयाकार हो जाता है, तब ध्यान कहलाता है। इन दोनों के एक होने से ध्यान उत्पन्न होता है, एकाग्रता उत्पन्न हो जाती है। उस समय दोनों के कनेक्शन (संधान) को 'ध्यान' कहते हैं। अगर वह कनेक्शन टूट जाए तो कहा जाएगा कि ध्यान टूट गया। कनेक्शन जुड़ा रहे तो ध्यान जुड़ा हुआ है ऐसा कहा जाएगा। ऐसा 48 मिनट तक रहे तो उसे 'सामायिक' कहा है।

उसे कहा है अज्ञान सामायिक

ध्यान तो, ध्याता-ध्येय और ध्यान जब एकाकार हो जाते हैं, तब उसकी सामायिक हो जाती है, अंतिम प्रकार की। लोग जो सामायिक करते हैं, वह तो मानो कि व्यवहारिक सामायिक है। वह सब तो अज्ञान सामायिक कहलाती है।

अज्ञान सामायिक अर्थात् मन-वचन-काया को बाहर नहीं जाने देना। लेकिन वह (आत्मा में रहकर फाइल न-वन को देखना) ही यथार्थ

सामायिक है। यह तो समाधि है। धारणा, ध्यान और समाधि, ये तीनों कब उत्पन्न होते हैं? जब ध्याता-ध्येय और ध्यान एकाकार हो जाएँ तब। वह धारणा कहलाती है जबकि यह (सामायिक) धारणा नहीं कहलाती। यह तो यथार्थ है।

अतः वहाँ पर जब वह ध्यान करता है, तब वह उसी रूप बनता जाता है। और अंत में जैसे-जैसे वह उस रूप बनता जाता है वैसे-वैसे उसकी शक्ति बढ़ती जाती है। अतः उसे तो रोज़ (ध्यान) करना पड़ता है और वह भी एकांत में जाकर! और फिर कहते हैं 'अपने वीतराग भगवान खड़े नहीं रहे थे? ऐसा करके खड़े रहे थे-काउसग ध्यान में!'

काउसग ध्यान ही सामायिक है

काउसग ध्यान कितने किए हैं?

प्रश्नकर्ता : एक भी नहीं।

दादाश्री : काउसग ध्यान क्या है? ऐसा समझ में आ गया है आपको?

प्रश्नकर्ता : काया का उत्सर्ग।

दादाश्री : काया का उत्सर्ग ऐसा शब्द लिखा हुआ है, लेकिन काया का, वाणी का और मन का उत्सर्ग करना है।

प्रश्नकर्ता : वास्तव में कायोत्सर्ग क्या है?

दादाश्री : आपकी फाइल नं-वन का नाम क्या है?

प्रश्नकर्ता : चंदू।

दादाश्री : चंदू। तो क्या आपको 'चंदू' सामने दिखाई देता है? आँखे मींचकर देखा? आँखें मींचो तो 'चंदू' पूरा ही सामने दिखाई देता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वह कायोत्सर्ग है। ऐसा करके

फिर एक घंटे तक रहे, तो वह कायोत्सर्ग कहलाता है लेकिन क्रमिकमार्ग में तो नहीं रह पाते। ऐसे करते-करते उसे नींद आ जाती है। तो फिर क्या करता है? बड़ा पत्थर होता है उस पर चढ़कर खड़ा रहता है। तब इस भय से खड़ा रहता है कि अगर 'गिर जाऊँगा तो मर जाऊँगा', तब जाकर रह सकता है, नहीं तो नींद आ जाती है। उन्हें कायोत्सर्ग रहता ही नहीं है न! जब तक आत्मा को पूरी तरह से नहीं जाना है तब तक आत्मा प्रकट नहीं होगा। अतः जैसे-तैसे करके कायोत्सर्ग करता रहता है।

पाँच आज्ञा ही सामायिक है

प्रश्नकर्ता : आपने जो कायोत्सर्ग बताया वैसा तो बहुत समय से हो रहा है।

दादाश्री : नहीं, कायोत्सर्ग तो अपना नियम, है। मैं तो क्या कहता हूँ कि आपको निरंतर चंदू को देखना वही अपने विज्ञान का सार है। चंदू क्या कर रहा है और क्या नहीं, उतना ही देखते रहना है। इसमें क्या नुकसान है? सिर्फ इतना ही देखना है।

यह देखना तो अति उत्तम है। उसे कायोत्सर्ग कहते हैं। लेकिन लोगों की समझ में नहीं आता। ज्ञानीपुरुष जानते हैं कि यह दिया हुआ आत्मा है और आत्मा की हाज़िरी में आप यह सब कर रहे हो। ज्ञाता-ज्ञेय संबंध से कर रहे हो।

यह सामायिक तो, चंदू पूरे दिन करता रहता है। आत्मा ही सामायिक है। जिसे ऐसी जागृति रही कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' वही सामायिक है। समभाव से निकाल (निपटारा) करना, वही सामायिक है। रियल-रिलेटिव देखना, वही सामायिक है, अपने ये पाँच वाक्य सामायिक रूपी ही हैं।

मन की अविचल स्थिति ही है सामायिक

प्रश्नकर्ता : ये प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान-

आलोचना व सामायिक, इन सभी में एकचुअली करना क्या है ?

दादाश्री : दादा कितने समय तक हाज़िर रहते हैं आपको ?

प्रश्नकर्ता : यों तो लगभग।

दादाश्री : निरंतर जैसा ? अब क्या इसमें से थोड़ी देर के लिए हट जाते हैं ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा होता है।

दादाश्री : हट जाते हैं। तो एक घंटे तक मन की अविचल स्थिति, उसी को सामायिक कहते हैं। उसमें मन विचलित नहीं होता, दूसरी जगह चारा चरने नहीं जाता। और अगर ये दादा दिखाई देते रहें तो सारे पाप भस्मीभूत कर देंगे। निदिध्यासन करके अंदर दिखाई देते रहें, तो पाप भस्मीभूत हो जाएँगे। थोड़े बहुत बाकी रहे होंगे न तो उनको सुबह-सुबह खत्म कर देंगे। हर रोज़ रात को यही करना है। रात को इतना ही ध्यान करना है और कोई ध्यान नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन लोग तो ऐसा कहते हैं कि, 'मैं सामायिक कर आता हूँ,' ऐसा करके मंदिर या जिनालय को दौड़ते हैं और वहाँ पर जाकर करने लगते हैं। वहाँ क्या करना होता है ?

दादाश्री : वह जो सामायिक है न, वह अलग प्रकार की सामायिक है अतः वह.....

प्रश्नकर्ता : वह माला फेरने जैसा है।

दादाश्री : हाँ, मार्केट मटिरियल जैसा, बाज़ारू माल। जबकि सामायिक तो कैसी होनी चाहिए ? लेकिन, कुछ भी ना करे, उसके बजाय वह करना अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका वास्तविक अर्थ तो वह....

दादाश्री : वे लोग क्या करेंगे ? 'मुझे सामायिक करनी है,' ऐसा कहते हैं इसलिए हमें एक बार साइकोलॉजिकल इफेक्ट हो जाता है, 'बहुत अच्छा है', इतना कहें न तो भी 'अच्छा' है। उससे फिर इफेक्ट होता है। अतः फिर कुदरती रूप से ही बाउन्ड्री बन जाती है कि आज कुछ भी याद नहीं करना है। अब, दुकान जिसे कि वह भूलना चाहता है, वही सब से पहले याद आती है। लेकिन उसने जो तय किया है न, वह तय किया, जो भाव किया है वह बहुत बड़ी चीज़ है। बाकी सब असर तो उसकी कमजोरी की वजह से हो जाते हैं तो उसमें वह बेचारा क्या करे ? उसका क्या गुनाह ?

मैं भगवान से कहता हूँ कि 'साहब, वह करने तो बैठा लेकिन अब बाकी सब भी घुस जाता है, उसमें फिर वह क्या करे?' उसके पास गुरखे नहीं हैं, अन्य कोई साधन नहीं है। जबकि मैंने जो ज्ञान दिया है वह गुरखे-वुरखे के साथ है ताकि कुछ भी अंदर न घुस पाए। 24 घंटे दादा याद रहते हैं न ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह जो पूरे एक घंटे या 48 मिनट...

दादाश्री : सामायिक यानी एक घंटा। उसकी शुरुआत किस तरह से ? किसी एक चीज़ में ध्यान रहता है। किसी भी एक चीज़ में मन रखना। शुरुआत में वे लोग पुस्तक पढ़कर एक सामायिक करते हैं, धर्म की पुस्तक। लुटेरों की कहानी की किताब से बहुत अच्छी सामायिक रहती है, लेकिन वह तो नीचे उतरने की सामायिक है। मन धार्मिक पुस्तक में रहे, और कहीं जाएगा नहीं तब समझना कि सामायिक अच्छी हुई। और अगर दूसरे दिन मन चला जाए तो हमें भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए, 'भगवान इतना तो पूरा करने दीजिए।' एक घंटे के लिए तो करने दीजिए, पढ़कर भी अंदर का ठिकाने पर नहीं रहता, राह

पर नहीं रहता। अब पढ़ने से शुरुआत करना लेकिन अंत में ऐसा रखना है कि बिना पढ़े ही बैठे रहना है और तब कोई भी विचार नहीं आना चाहिए। उसमें भी गड़बड़ हो जाती है लेकिन ऐसे करते-करते, आगे बढ़ते-बढ़ते, सामायिक वहाँ तक पहुँचती है कि मन में जो तय किया हो, तो एक घंटे तक उसके अलावा अन्य किसी जगह पर बाहर नहीं जाता। बिना प्रयत्न के सहजरूप से वैसा रहे, तभी वह सामायिक है। हमारी सामायिक निरंतर, 24 घंटे रहती है और आपकी भी रहती है। आपको भी सामायिक के बिना तो शांति नहीं है! शुरुआत में सामायिक कैसे करें, वह समझाया है और अंत में उसे पूर्णाहुति की सामायिक के बारे में बताया है।

सामायिक में ज़रूरत है एकाग्रता की

प्रश्नकर्ता : दादा, आप सामायिक करने को कहते हैं, लेकिन मुझसे कभी भी सामायिक नहीं हो पाती।

दादाश्री : 'नहीं हो पाती, नहीं हो पाती।' तुझे उसी की सामायिक करनी है।

भगवान इतना ही पूछते हैं कि ध्यान में थे या बेध्यान में? हाँ, वे बेध्यान में नहीं थे। इसने 'नहीं होता' उसका ध्यान किया, और उसने 'हो रहा है' उसका ध्यान किया। दूसरी कोई झंझट है ही नहीं। यह तो वही का वही है। यों एक ही चीज़ है। ऐसे देखें तो ऐसे, और वैसे देखें तो वैसे। हम अगर इस तरफ न घूमें तो बेक(पीठ) उस तरफ कहलाएगी और उस तरफ घूमेंगे तो बेक इस तरफ कहलाएगी। हम तो ऐसा उल्टा शुरू कर देते हैं कि 'नहीं होती।' अगर मैं उसकी जगह पर होऊँ तो कभी का ऐसा करने बैठ जाऊँ कि 'नहीं होती, नहीं होती।' ताकि अंतराय-वंतराय सब कुछ चले जाएँ। अंतराय कहेंगे कि इनसे, नहीं जीत सकते,

ये तो उल्टा घूमकर बैठे हैं। इस दिशा से नहीं हो रहा है तो हम ऐसे घूम गए। फिर जब उस दिशा की तरफ सीधे जाएँगे तब यह टेढ़ा हो जाएगा तो उस तरफ घूम जाएँगे। दिशाएँ तो बदलती रहेंगी।

अतः यह सारा एक ही है, लेकिन उसमें दो नहीं होने चाहिए। तब ऐसा नहीं होना चाहिए कि घर याद आए। 'नहीं होता है', 'नहीं होता है' वही ध्यान रहना चाहिए। इन दादा के पूरे बाल सफेद दिखाई देते हैं, किसी को ध्यान में सभी काले दिखाई देते हैं। उसमें कोई हर्ज नहीं है। हमें किससे मतलब है? एकाग्र ध्यान था या नहीं? ध्यान कब कहलाता है? जब एकाग्र होने पर एक ही वस्तु दिखाई दे। ये सब जो राम-राम बोलते हैं, वह ध्यान नहीं है जबकि यह ध्यान तो दादाई ध्यान कहलाता है। यह तो आश्चर्य है!

प्रतिकूलता में ज्ञान का उपाय सेट करो

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद पर्युषण में फाइल समझकर उपाश्रय में जा सकते हैं या नहीं?

दादाश्री : जा सकते हैं, जाने में क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : हर्ज नहीं है, लेकिन वहाँ पर चैन नहीं पड़ता, आज गया था तो मुश्किल से एक घंटा बिता पाया।

दादाश्री : ऐसा है न, लोगों की शरम से जाना पड़े तो कभी जा आओ, लेकिन सभी में शुद्धात्मा देखते रहना। बार-बार देखते रहना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, मैंने पहले वही किया फिर महाराज साहब व्याख्यान दे रहे थे तो उनमें भी शुद्धात्मा देखें।

दादाश्री : फँस गए, तो समय नहीं बिगाड़ना है अपना। यों फँस तो सकते हैं। शुद्धात्मा के दर्शन करने हैं। ऐसे करते-करते एक घंटा बिता देना है, वहाँ पर ऐसी सामायिक करनी है।

आज्ञापूर्वक करो, यह शुद्ध सामायिक

सामायिक में क्या करना है? ये दो व्यू पोइन्ट दिए हैं न, तो इन सभी में शुद्धात्मा देखते-देखते जाना है, सब्जी लेने। तब अगर कोई गधा या फिर बैल जा रहा हो, दूसरा कुछ जा रहा हो, गाय-बकरी, जीवमात्र को आज्ञापूर्वक देखते-देखते जाना है और वापस आज्ञापूर्वक ही आना है। इससे एक तो घर के लोगों ने कहा कि 'सब्जी ले आओ' तो हम चलकर ले आए, पैसे खर्च नहीं हुए और दूसरा क्या फायदा हुआ? वह यह कि दादा की आज्ञा का पालन हुआ। तीसरा फायदा क्या हुआ कि सामायिक हो गई। चौथा फायदा क्या हुआ? सामायिक के फलस्वरूप समाधि रही। अतः इन सभी आज्ञाओं का पालन करना। कुछ नहीं तो एक घंटा निकालना न! नहीं निकाल सकते? एक घंटे के लिए दिव्यचक्षु की सामायिक करनी है। हमारी आज्ञा का कोई जितना पालन करेगा उसे अवश्य ही उतना ही हमारा राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) मिलेगा।

हमें ऐसा नहीं है कि इस तरह से बैठकर करना। दौड़ना, कूदना, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन शुद्धात्मा देखते-देखते हमारी आज्ञा में रहना। अपनी सामायिक में स्थिर होकर बैठने को नहीं कहा गया है। यह काल ऐसा नहीं है कि स्थिर होकर बैठा जा सके। स्थिर बैठ पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। अतः हम कहते हैं कि आपको जैसे ठीक लगे वैसे करना। हमने तो यह सरल और सीधा दे दिया है। और एक घंटे तक ऐसा देखा होगा न? करके देखा है?

एक दिन यों जब सब्जी लेने जाएँ, घूमने जाएँ उस समय सभी में शुद्धात्मा देखते-देखते जाना है। और वही योग करते-करते वापस लौटना है। तो उससे रिलेटिव और रियल, व्यवहार और निश्चय, देखते, देखते, देखते अलग दिखाई देंगे। अब यह व्यवहार तो इन आँखों से दिखाई देता है, चमड़े की आँखों से और निश्चय उन आँखों से, अंदर की आँखों से दिखाई देता है। ऐसे देखेंगे तो एक घंटे में ही पुणिया श्रावक की सामायिक हो जाती है। अब वह व्यवहार सामायिक करने की जरूरत नहीं है। आत्मा सम में आ गया तो वही सामायिक है और आत्मा निरंतर रहेगा। एक क्षणभर भी विस्मृत नहीं होगा। अपने आप ही याद आता रहेगा। आपको याद नहीं करना है। याद करना हो तो फिर वापस विस्मृत हो जाएगा, विस्मरण हो जाएगा। यह तो अपने आप ही सहजरूप से उत्पन्न हो जाता है। साक्षात्कार हो गया है इसलिए वह निरंतर ध्यान में रहेगा ही कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' शुद्धात्मा अर्थात् शुक्लध्यान उत्पन्न हो जाएगा, लेकिन आपसे प्रथम स्टेज का शुक्लध्यान हो पाएगा। प्रथम स्टेज अर्थात् अस्पष्टवेदन। आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं। (आपका) अस्पष्टवेदन और हमारा स्पष्टवेदन है और भगवान का केवलज्ञान होता है, तीसरी स्टेज। और चौथे स्टेज में मोक्ष। बहुत दूर नहीं है अब, यदि आप मेरे कहे अनुसार करोगे तो। अतः बस इतना ही समझने की जरूरत है।

- जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- ✦ 'आस्था' पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- ✦ 'डीडी'-इन्डिया पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

11-12 जून : बेंगलूर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में 709 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिसमें दक्षिण भारत के विविध शहरों से कई मुमुक्षु आए थे। कच्छी पटेल समाज के कई मुमुक्षु आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए आए थे। 'दादा दरबार' में स्थानीय महात्माओं को पूज्य श्री के मार्गदर्शन और दर्शन का अमूल्य लाभ प्राप्त हुआ। आप्तपुत्र द्वारा रखे गए फॉलोअप सत्संग में नए ज्ञान लिए हुए महात्मा अपना ज्ञान दृढ़ करने के लिए आए थे।

17 जून : पूज्य श्री ने ब्राज़िल-अमरीका और केनेडा सत्संग प्रवास के लिए सीमंधर सिटी से प्रस्थान किया। पूज्य श्री एक दिन के लिए दुबई में रुके थे। 'दादा दरबार' के अंतर्गत दुबई के महात्माओं को पूज्य श्री से बातचीत और दर्शन का अनोखा लाभ मिला।

18-27 जून : ब्राज़िल में सतत दूसरे वर्ष भी पूज्य श्री का सत्संग कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस साल साओ पौलो शहर में कार्यक्रम आयोजित हुआ। शिविर से पहले पूज्य श्री ब्राज़िल के प्रसिद्ध इग्वाजू फॉल्स और इग्वाजू बर्ड पार्क में प्राकृतिक सौंदर्य के बीच विविध पक्षियों को देखने गए। शिविर से पहले इन्फोर्मल सत्संग के दौरान गत वर्ष ज्ञान लिए हुए महात्माओं ने अपने सुंदर अनुभवों का वर्णन किया। सत्संग के दौरान अपनी जिज्ञासा संतुष्ट करके, आत्मज्ञान संबंधित जानकारी प्राप्त करके 350 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और बाद में गरबा तथा 'दादा दरबार' के अंतर्गत पूज्य श्री के दर्शन का अनोखा लाभ प्राप्त किया।

29 जून - 1 जुलाई : पूज्य श्री का अमरीका सत्संग प्रवास ह्यूस्टन शहर से प्रारंभ हुआ। सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान 140 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और लगभग 500 महात्माओं ने लाभ लिया। 'दादा दरबार' के दौरान 175 महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्रों द्वारा फॉलोअप सत्संग आयोजित हुआ।

2-4 जुलाई : डलास शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में 500 महात्मा आए थे और 135 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में 200 महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन का लाभ मिला। आप्तपुत्र सत्संग से नए ज्ञान लिए महात्माओं को पाँच आज्ञा के बारे में और भी विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई।

8 - 11 जुलाई : न्यू जर्सी में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान 325 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। यहाँ अन्य सेन्ट्रों की तुलना में सत्संगियों की संख्या ज्यादा थी। 1200 से भी ज्यादा महात्माओं की उपस्थिति थी। 'दादा दरबार' में 450 सेवार्थी महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। ज्ञानविधि के बाद मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए आप्तपुत्रों द्वारा फॉलोअप सत्संग आयोजित हुआ।

14-20 जुलाई : केनेडा के टोरन्टो शहर में पूज्य श्री की निश्रा में गुरुपूर्णिमा महोत्सव 2008 के पश्चात 8 साल बाद मनाया गया। केनेडा के महात्माओं ने टोरन्टो एयरपोर्ट पर पूज्य श्री का हार्दिक स्वागत किया। दुनियाभर के विविध देशों से 3000 महात्माओं की उपस्थिति थी। इस इवेन्ट में सत्संग के लिए होटल के 3 हॉल में महात्माओं के बैठक व्यवस्था और 9 होटलों में रहने के लिए व्यवस्था की गई थी। दिनांक 14 को रात में वेलकम सेशन रखा गया। स्टेज पर पूज्य श्री के सोफे के पीछे फ्लेक्स में त्रिमंदिर की प्रतिकृति बनाई गई थी। उसी तरह पूज्य नीरू माँ की समाधि का मॉडल भी बनाया गया था। LMHT के विविध सेन्ट्रों के बच्चों ने पेपर क्राफ्ट द्वारा अडालाज त्रिमंदिर संकुल के विविध लेन्डमार्क मॉडल बनाए थे। शिविर के दौरान पूज्य श्री द्वारा 'गुरु-शिष्य' पुस्तक पर पारायण और दो विशेष टॉपिक पर सत्संग हुआ। इसके अलावा पूज्यश्री ने महात्मा और मुमुक्षुओं के प्रश्नों के जवाब दिए। कई महात्माओं ने अपने ज्ञान अनुभव बताए। ज्ञानविधि के दौरान 400 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सत्संग में टोरन्टो शहर के गुजराती, जैन तथा पारसी समाज के लोग भी उपस्थित थे। गुरुपूर्णिमा के दिन पूज्य श्री ने विधि के बाद विशेष संदेश देते हुए कहा कि 'इस साल हम सामनेवाले व्यक्ति की प्रकृति के अनुकूल होकर फाइलों का समभाव से निकाल करेंगे।' उसके बाद पूज्य श्री ने जगत् कल्याण की भावना की सामायिक करवाई और सीमंधर स्वामी तथा दादाश्री का पूजन और आरती हुए। महात्माओं ने पूर्ण स्वरूपी दादा के सूक्ष्म स्वरूप के भाव से दर्शन करके बहुत धन्यता का अनुभव किया और महात्माओं ने खुद की कमजोरी के लिए शक्तियाँ माँगीं। पूज्य श्री ने घोषणा की कि अगले साल गुरुपूर्णिमा महोत्सव अमरीका के फिलाडेलफिया शहर में मनाया जाएगा। अंत में सभी महात्माओं ने पूज्य श्री के दर्शन किए। दिनांक 20 को पूज्य श्री के सत्संग के बाद गुरुपूर्णिमा महोत्सव की पूर्णाहूति हुई।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पंजाब-हरियाणा-दिल्ली

<u>दिल्ली</u>	दिनांक : 18 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 1	संपर्क : 9810098564
स्थल :	लौरैल हाई स्कूल, शिवा मार्केट के पीछे, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा मेट्रो स्टेशन, दिल्ली.		
<u>सोनितपत</u>	दिनांक : 20 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9728310007
स्थल :	घर नं. 20/50, गली नं-1, मालविया नगर, ककरोई रोड, सोनितपत.		
<u>पानीपत</u>	दिनांक : 21 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9812131414
स्थल :	मनोरंजन केन्द्र, NFL टाउनशीप, पानीपत.		
<u>कुरुक्षेत्र</u>	दिनांक : 22 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9467763460
स्थल :	भगवान परशुराम कोलेज, मेईन मार्केट, सेक्टर-5, हुडा, कुरुक्षेत्र.		
<u>चंदीगढ़</u>	दिनांक : 23 सितम्बर	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9872188973
स्थल :	गढ़वाल भवन, सेक्टर-29-A श्री साँई बाबा मंदिर के पास, चंदीगढ़.		
<u>जालंधर</u>	दिनांक : 24 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 4	संपर्क : 9814063043
स्थल :	इगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेंट्रल मिल कम्पाउंड, नजदीक दोरिया पुल, रेलवे स्टेशन, जालंधर.		
<u>जालंधर</u>	दिनांक : 25 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 6	संपर्क : 9814063043
स्थल :	इगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेंट्रल मिल कम्पाउंड, नजदीक दोरिया पुल, रेलवे स्टेशन, जालंधर.		
<u>फरिदाबाद</u>	दिनांक : 17 सितम्बर	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9501009538
स्थल :	सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-9, कम्प्यूनिटी सेन्टर & गुरुद्वारा के पास, फरिदाबाद.		

उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड

<u>गाजियाबाद</u>	दिनांक : 19 सितम्बर	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9968738972
स्थल :	कोनार्क एनक्लेव, सेक्टर-17, 'E' ब्लोक, वसुंधरा, साँई मंदिर के पास, गाजियाबाद.		
<u>हरिद्वार</u>	दिनांक : 21 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9719415074
स्थल :	सियारम जानकी वल्लभ सेवा सदन, दुधारी चौक, साँई बाबा वाली गली, भूपतवाला, हरिद्वार.		
<u>लखनौ</u>	दिनांक : 22 सितम्बर	समय : शाम 4-30 से 7	संपर्क : 8090177881
स्थल :	मधुर संगीत विद्यालय, 563/74, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ.		
<u>अलाहाबाद</u>	दिनांक : 26 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9335889980
स्थल :	कमला नेहरु इलेक्ट्रो होमियोपेथी इन्स्टीट्यूट, रामबाग के सामने, रेलवे स्टेशन, अलाहाबाद.		

छत्तीसगढ़

<u>डोंगरगढ़</u>	दिनांक : 9 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 8349545600
स्थल :	मारवाड़ी धर्मशाला, जयस्तंभ चौक के पास, डोंगरगढ़.		
<u>उतई</u>	दिनांक : 10 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 8349545600
स्थल :	शारदा महिला मानस भवन, बाज़ार चौक, उतई.		
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 10 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 8349545600
स्थल :	शिव गायत्री मंदिर, रिसाली सेक्टर, भिलाई.		
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 11 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 8349545600
स्थल :	गणेश मंदिर, पूजा चौक, राधिका नगर, भिलाई.		
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 11 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 8349545600
स्थल :	कम्प्युनिटी होल, एम.आई.जी. ड्यूप्लेक्स इंडस्ट्रियल एरिया, हाउसींग बोर्ड, भिलाई.		
<u>राजनंदगाँव</u>	दिनांक : 12 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 7354144555
स्थल :	लोहाणा महाजन वाडी, स्टेशन रोड, राजनंदगाँव.		

दादावाणी

<u>दुर्ग</u>	दिनांक : 13 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 7046940624
स्थल : अग्रसेन भवन, शीतला मंदिर के पास, बैगापारा, दुर्ग.			
<u>दुर्ग</u>	दिनांक : 13 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 7046940624
स्थल : क्वार्टर नं 75, पद्मनाभपुर, दुर्ग.			
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 14 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 8349545600
स्थल : शिव मंदिर, सेक्टर 3, भिलाई.			
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 14 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 8349545600
स्थल : बोरसी साई मंदिर, भिलाई.			
<u>दुर्ग</u>	दिनांक : 15 सितम्बर	समय : दोपहर 2 से 3	संपर्क : 8349545600
स्थल : अधीवक्ता संघ ग्रंथालय, डिस्ट्रिक्ट कोर्ट, दुर्ग.			
<u>भिलाई</u>	दिनांक : 15 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 8349545600
स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, मरोदा वाटर टैंक, मैत्री गार्डन चौक, भिलाई.			
<u>रायपुर</u>	दिनांक : 17 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9329523797
स्थल : सरस्वती शीशु मंदिर, चाँदखुरी फार्म, रायपुर.			
<u>रायपुर</u>	दिनांक : 18 सितम्बर	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9329523797
<u>रायगढ़</u>	दिनांक : 20 सितम्बर	समय : दोपहर 3 से 5	संपर्क : 9893569548
स्थल : मेगा फूड मार्ट के निचे, रामबाग के पास, कोटरा रोड, रायगढ़.			
<u>बिलासपुर</u>	दिनांक : 21 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9425530470
स्थल : जैन भवन, गुजराती समाज के सामने, टिकरापारा, बिलासपुर.			

महाराष्ट्र

<u>नागपुर</u>	दिनांक : 8 सितम्बर	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9970059233
स्थल : श्री नागपुर कच्छी विसा ओशवाल समाज, 57/58, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकडगंज, नागपुर.			
<u>सतारा</u>	दिनांक : 20 सितम्बर	समय : दोपहर 3 से 6	संपर्क : 9421212685
स्थल : साँई दत्ता मंगल कार्यालय, वधे फटा हाई-वे, नेवल सरदार बाजार, सतारा.			
<u>कोल्हापुर</u>	दिनांक : 21 सितम्बर	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9960787776
स्थल : सुमेध होल, शाहपुरी, गोकुल होटल के पीछे, दूसरी लेन, कोल्हापुर.			
<u>सांगली</u>	दिनांक : 22 सितम्बर	समय : शाम 4-30 से 7	संपर्क : 9423870798
स्थल : पाटीदार भवन, सर्किट हाउस, माधव नगर रोड, सांगली.			
<u>सोलापुर</u>	दिनांक : 23 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6-30	संपर्क : 8421899781
स्थल : कन्हैयालाल ब्रदर्स के ऊपर, दत्ता चौक, सोलापुर.			
<u>अहमदनगर</u>	दिनांक : 26 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9421836256
स्थल : पटेल मंगल कार्यालय, सरदार पटेल वाडी, होटेल राज पेलेस के पास, तिलक रोड, अहमदनगर.			
<u>औरंगाबाद</u>	दिनांक : 27 सितम्बर	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 8308008897
स्थल : यशोमंगल हॉल, पन्नालाल नगर, न्यू उस्मानपुर, औरंगाबाद.			
<u>नासिक</u>	दिनांक : 28 सितम्बर	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9021232111
स्थल : पाटीदार भवन जनरल वैद्य नगर, स्टेशन रोड, पूर्णिमा बस स्टोप, नासरडी, नासिक.			
<u>जलगाँव</u>	दिनांक : 29 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9422354985
स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बैंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.			
<u>अमरावती</u>	दिनांक : 17-18 सितम्बर	समय एवं स्थल की जनकारी हेतु	संपर्क : 9422335982
महात्माओं की आप्तपुत्र भाईयों साथ सत्संग शिबिर			

दादावाणी

उड़ीसा-पश्चिम बंगाल-झारखंड

ब्रह्मपुर	दिनांक : 9 सितम्बर	समय : शाम 6 से 9	संपर्क : 9853333355
स्थल : गीता भवन, गिरी रोड, ब्रह्मपुर.			
कटक	दिनांक : 10 सितम्बर	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 7809266474
स्थल : गाँधी भवन, सनशाइन फ़िल्ड के पास, बखराबाद, कटक.			
भुवनेश्वर	दिनांक : 11 सितम्बर	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9090276204
स्थल : गुजरात भवन, 564/565, प्राची एन्क्लेव, नीलाद्री विहार, चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर.			
भुवनेश्वर	दिनांक : 12 सितम्बर	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 8280073175
स्थल : माहा बोधि सोसाइटी (बुद्ध मंदिर), ओडिशा स्टेट हाउजिंग बोर्ड के पास, यूनिट-9, भुवनेश्वर.			
सम्बलपुर	दिनांक : 13 सितम्बर	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9668159987
स्थल : जलाराम मंदिर, गुजराती कोलोनी के पास, जी.एम. कोलेज रोड, सम्बलपुर.			
राऊरकेला	दिनांक : 14 सितम्बर	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9668159987
स्थल : शक्ति क्लब & सोशियल होम, शक्ति नगर, राऊरकेला.			
टाटानगर	दिनांक : 15-16 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9431179590
स्थल : जलाराम मंदिर, नं-6, भाईचंद क्वार्टरर्स, कोन्ट्राक्टर्स एरिया, बिस्तीपुर, उदानी जैन भवन के पास, टाटानगर.			

दक्षिण भारत

निपानी	दिनांक : 12 सितम्बर	समय : दोपहर 3-30 से 6	संपर्क : 9945894202
स्थल : श्री विष्णु निवास, श्रीनगर 1 लेन, मुरगुड रोड, निपानी, बेलगाम.			
बेलगाम	दिनांक : 13 सितम्बर	समय : दोपहर 3-30 से 6	संपर्क : 9945894202
स्थल : जिवेश्वर भवन, मेईन रोड, वडगाँव, बेलगाम.			
हुबली	दिनांक : 14 सितम्बर	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 9739688818
स्थल : एन.के. सभागृह होल, केशवापुर सर्कल, हुबली.			
हुबली	दिनांक : 14 सितम्बर	समय : दोपहर 3-30 से 6	संपर्क : 9739688818
स्थल : पाटीदार भवन, उंकल टीम्बर यार्ड, उंकल, हुबली.			
चेन्नई	दिनांक : 19 सितम्बर	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9380159957
स्थल : कच्ची मिलन होल, पुराना नं-142, नया नं-346, पुरुशालकम हाई रोड, अभिरामी सिनेमा के पास, प्रिन्स टावर.			

अन्य राज्य

ग्वालियर	दिनांक : 16 सितम्बर	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9926265406
स्थल : के.एस. मेमरिल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्टो पार्क, ग्वालियर.			
गोआ	दिनांक : 24 सितम्बर	समय : शाम 4-30 से 6-30	संपर्क : 8698745655
स्थल : मेनेज़ेस ब्रागान्ज़ा होल, पुलीस स्टेशन के पास, पणजी.			

अकोला दि. 16 सितम्बर	संपर्क : 9422403002	मुंबई दि. 25 सितम्बर	संपर्क : 9323528901
हैदराबाद दि. 16 सितम्बर	संपर्क : 9885058771	पूणे दि. 24-25 सितम्बर	संपर्क : 7218473468
बेंगलोर दि. 17-18 सितम्बर	संपर्क : 9590979099	वाराणसी दि. 24-25 सितम्बर	संपर्क : 9452710927
कोलकाता दि. 17-21 सितम्बर	संपर्क : 9830093230	अलाहाबाद दि. 26 सितम्बर	संपर्क : 9335889980
गोरखपुर दि. 23 सितम्बर	संपर्क : 7309061683	कानपुर दि. 27 सितम्बर	संपर्क : 9452525981

समय एवं स्थल की जनकारी हेतु संपर्क करे.

त्रिमंदिरो के संपर्क: अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, अन्य सेन्ट्रों के संपर्क: अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादामंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

28 अगस्त (रवि) सुबह 9 बजे से - पूज्यश्री के दर्शन का विशेष कार्यक्रम

29 अगस्त से 5 सितम्बर (सोम से सोम) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (पू.) पर वाचन-सत्संग

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। 3) ओढ़ने-बिछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

Pujya Deepakbhai's Australia-Fiji-NZ-Malaysia Satsang Schedule 2016

Date	Day	City	From	To	Session Title	Venue	Contact No. & Email
9-Sep	Fri	PERTH	6-00 PM	8-00 PM	Satsang	Bendat Parent and Community Centre 36 Dodd St, Wembley Perth, WA 6014 Australia	+61 430148386
10-Sep	Sat	PERTH	10-00 AM	12-00 PM	Aptaputra Satsang		+61 425255677
10-Sep	Sat	PERTH	4-00 PM	7-30 PM	Gnanvidhi		+61 401367868
11-Sep	Sun	PERTH	4-30 PM	7-00 PM	Satsang	Mercure Gerringong Resort, 1 Fern street Gerringong, NSW 2534 Australia	perth@au.dadabagwan.org
12-Sep	Mon	SYDNEY	All Day	All Day	Mahatma Only Shibir		+ 61421127947
to	All Day		All Day	+ 61402179706			
15-Sep	Thu	SYDNEY	All Day	All Day		sydney@au.dadabagwan.org	
16-Sep	Fri	SYDNEY	7-00 PM	9-30 PM	Satsang	Sant Nirankari Satsang Bhawan, 166 Glendenning Road, Glendenning, NSW - 2761, Australia	+ 61421127947
17-Sep	Sat	SYDNEY	10-00 AM	12-00 PM	Aptaputra Satsang		+ 61402179706
17-Sep	Sat	SYDNEY	3-30 PM	7-00 PM	Gnanvidhi		+61449629797
18-Sep	Sun	SYDNEY	4-00 PM	7-00 PM	Satsang		sydney@au.dadabagwan.org
18-Sep	Sun	SUVA	6-00 PM	8-00 PM	Aptaputra Satsang	Shree Laxmi Narayan Mandir, 5 Holland Street, Suva, Fiji	+679 9313879
19-Sep	Mon	BA	7-00 PM	9-00 PM	Aptaputra Satsang	Shree Radha Krishna Mandir, Ganga Singh Street, Ba, Fiji	+679 9313879
20-Sep	Tue	LAUTOKA	7-30 PM	9-30 PM	Satsang	Fiji Girmat Centre Hall, Tavakubu Road, Lautoka, Fiji	dadabagwanfiji@gmail.com
21-Sep	Wed	LAUTOKA	7-30 PM	10-00 PM	Gnanvidhi		+679 9313879
22-Sep	Thu	LAUTOKA	7-30 PM	9-30 PM	Satsang		+679 9447678
23-Sep	Fri	ROTORUA	8-00 PM	9-30 PM	New Zealand Shibir	Holiday Inn, 10 Tryon St, Whakarewarewa, Rotorua 3043 New Zealand	dadabagwanfiji@gmail.com
24-Sep	Sat	ROTORUA	All Day	All Day	New Zealand Shibir		+64 21 037 6434
25-Sep	Sun	ROTORUA	3-00 PM	6-30 PM	Gnanvidhi		+64 9 9486119
26-Sep	Mon	ROTORUA	All Day	All Day	New Zealand Shibir		info@nz.dadabagwan.org
28-Sep	Wed	MELAKA	7-45 PM	10-00 PM	Satsang	Gujarati Vanik Sangh, 99-101 Jalan Banda Kaba, 75000 Melaka, Malaysia	+60126385035
29-Sep	Thu	MELAKA	7-45 PM	10-00 PM	Satsang	Malacca Gujarati Samaj, No 186 Jalan Ujong Pasir, 75050, Melaka, Malaysia	info@sg.dadabagwan.org
30-Sep	Fri	MELAKA	6-30 PM	10-00 PM	Gnanvidhi		+60126385035
							info@sg.dadabagwan.org

पूजे

21 अक्तूबर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - महात्माओं के लिए विशेष सत्संग

22 अक्तूबर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - सत्संग तथा 23 अक्तूबर (रवि) शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि

स्थल: गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वरागेट बस स्टेशन के पास. संपर्क : 7218473468

24 अक्तूबर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क : 7218473468

परम पूज्य दादा भगवान का 109वाँ जन्मजयंती महोत्सव - वलसाड शहर में

उद्घाटन समारोह : 9 नवम्बर,

सत्संग शिविर : दि. 10 से 12 नवम्बर,

ज्ञानविधि : दि. 12 नवम्बर,

जन्मजयंती : दि. 13 नवम्बर

स्थल : आई.पी. गांधी हाईस्कूल के सामने, वांकी नदी के पास, जुजवा गाँव, वलसाड-धरमपुर रोड. संपर्क : 9924343245

विषमभाव नहीं होने देना, वही सच्ची सामायिक

सामायिक का मतलब एकाग्रता नहीं है। अगर ऐसा पता चले कि वहाँ दस प्याले फूट गए हैं, तब भी भीतर समता रहे, एक्जैक्ट! वास्तव में सामायिक का अर्थ यही है कि किसी भी वजह से विषमभाव नहीं होने देना! सिर्फ 48 मिनट के लिए विषमभाव नहीं होने देना, भले सम न रहे लेकिन विषम नहीं होने देना, वही सामायिक है। अहोहो! वह तो बहुत बड़ा आश्चर्य कहलाएगा! जैसे कि जब कोई लड़का अपनी माँ को बहुत गालियाँ दे रहा हो, उस क्षण बाप से सहन नहीं होता. लेकिन सामायिक में बैठा है, इसलिए मन में पूरी तरह से सतर्क है कि अभी सामायिक में बैठा हूँ, इसलिए मुझे विषमता नहीं लानी है। भीतर से उछल तो रहा है लेकिन उसे सम कर देता है। जैसे कि तौलते वक्त अगर एक पल्ले में कम हुआ तो उसमें डाला। यह पल्ला ऊपर गया तो वापस इसमें डाला और ऐसे करते-करते वजन सम कर दिया। यदि ऐसी सामायिक करे तब, तो फिर काम ही हो जाए!

- दादाश्री

